सत्यमेव जयते

प्रयास

वार्षिक पत्रिका

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून

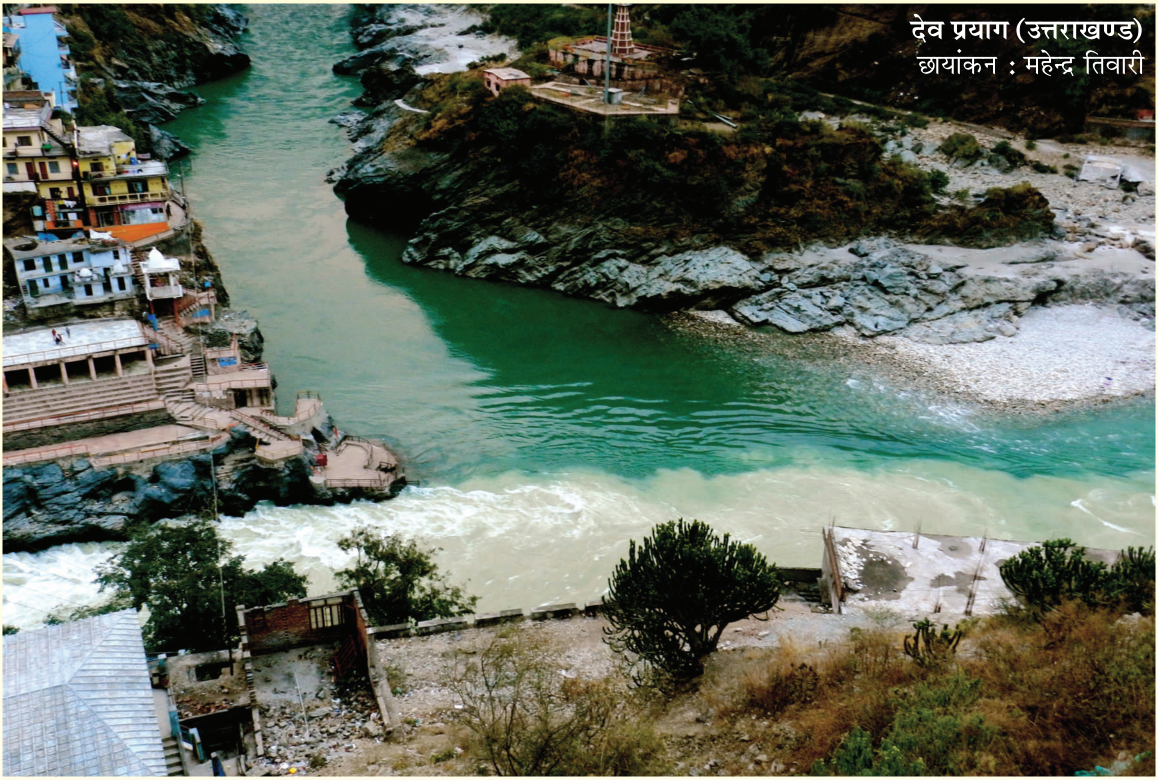

देव प्रयाग (उत्तराखण्ड)
छायांकन : महेन्द्र तिवारी

नेनीताल (उत्तराखण्ड)
छायांकन : अरविन्द कुमार उपाध्याय

प्रयास

चतुर्थ अंक

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
सी–1/105, वैभव पैलेस, इन्दिरा नगर, देहरादून–248006

सत्यमेव जयते

श्री सौरभ नारायन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
उत्तराखण्ड, देहरादून

संरक्षक की लेखनी से

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका "प्रयास" के चतुर्थ अंक को प्रकाशित करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। पूर्व के अंकों की भांति "चतुर्थ" अंक में भी कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया है कार्यालयी कार्यों की अधिकता के बावजूद भी निबंध लेखन, कविता लेखन आदि में भी सराहनीय कार्य किया है। हिन्दी में साहित्य लेखन के अलावा हमारे कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी अपना कार्यालयी कार्य हिन्दी में करने का भरसक प्रयास करते हैं।

"प्रयास" में हिन्दी को गौरव प्रदान करने में जुटे सभी रचनाकारों, संपादकों तथा अन्य को, जिन्होंने "प्रयास" में अपना सहयोग प्रदान किया है, उनके योगदान के लिए उन्हें बधाई देता हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हमारी पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति करेगी। आशा है आपको हमारा प्रयास सार्थक लगेगा। कृपया अपने सुझावों से हमें अवगत अवश्य कराएं।

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

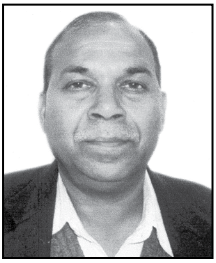

सत्यमेव जयते

श्री रामपाल सिंह
उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा),
उत्तराखण्ड, देहरादून

प्रधान सम्पादक की लेखनी से

गृह पत्रिका "प्रयास" के लगातार तीन सफल अंकों के प्रकाशन के बाद "प्रयास" का चतुर्थ अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। कार्यालय के अपने संवैधानिक दायित्वों के साथ–साथ ही हमारा यह भी नैतिक दायित्व बनता है कि अपनी "राष्ट्रभाषा" हिन्दी को "राजभाषा" की पदवी प्राप्त कराने में सहयोग प्रदान करें। आशा है कि "प्रयास" के साथ–साथ ही हम अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग अपने कार्यालय में करें और अपनी मातृभाषा के गौरव में वृद्धि करें।

उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा)

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्री सौरभ नारायन, महालेखाकार
प्रधान संपादक	:	श्री रामपाल सिंह, उपमहालेखाकार
परामर्शदाता	:	श्री पी.एस. रावत, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
संपादक	:	श्री संजय राजदान, लेखापरीक्षा अधिकारी
उपसंपादक	:	श्री राकेश रंजन मिश्रा, हिन्दी अधिकारी
संकलनकर्ता	:	सुश्री रेखा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री अरविन्द कुमार उपाध्याय, लेखापरीक्षक
सहायक	:	श्री मनोज कुमार, डी.ई.ओ.

आपके चंद सराहनीय पत्र – हमारे लिए महत्वपूर्ण

संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय की पत्रिका 'प्रयास' के तृतीय अंक की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक, रोचक तथा शिक्षाप्रद हैं। 'हिन्दी भाषा—एक अविरल प्रवाह', 'विश्व मंच पर उभरती हिन्दी', 'विकसित भारत का बिखरता समाज', 'नारी सशक्तिकरण—हकीकत या वहम', 'अपनी छवि को बनाओ बेहतर', 'धन की यादें नहीं होती पर अनुभव की होती हैं', 'पापा की प्यारी', 'कलयुग का चरमोत्कर्ष' तथा 'पश्चात्ताप' रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम सम्पादन व संकलन हेतु सम्पादन मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा चंडीगढ़

आपके चंद सराहनीय पत्र – हमारे लिए महत्वपूर्ण

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "प्रयास" के तृतीय अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री सी.एस. त्रिपाठी का लेख "भारतीय संदर्भ में गणतन्त्र का इतिहास", श्री अशोक कुमार का लेख "क्या लिखूँ", श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय का लेख "दशहरा मेला", कु. रेखा का लेख "नारी सशक्तिकरण हकीकत या वहम", श्रीमती संजु रानी का लेख "अपनी छवि को बनाओ बेहतर", श्री प्रवीण कुमार श्रीवास्तव का लेख "गरीब की ईमानदारी", श्री सूर्यपाल की गजल "जिंदगी में सदा मुस्कुराते रहो", मास्टर शरजील सलीम का लेख "बात ही कुछ और है", सुश्री रश्मि दुबे की कविता "पापा की प्यारी", श्री अरविंद कुमार उपाध्याय की कविता "कलयुग का चरमोत्कर्ष", श्रीमती हिना सलीम की "आज के हालात देखिए", श्री संदीप सिंह की कविता "पाखंडी संत", और श्री रविशंकर का "यात्रा संस्मरण" आदि बहुत ही सुंदर व ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में प्रकाशित प्राकृतिक दृश्य एवं कार्यालयीन चित्रमय झलकियां बहुत सुंदर हैं।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–॥ महाराष्ट्र, नागपुर

आपके चंद सराहनीय पत्र - हमारे लिए महत्वपूर्ण

हिन्दी गृह पत्रिका "प्रयास" के तृतीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में संग्रहित सभी रचनाएं उच्च स्तरीय एवं प्रेरणास्रोत हैं। पत्रिका में प्रकाशित कु० रेखा द्वारा लिखित लेख "नारी सशक्तिकरण–हकीकत या वहम", सुश्री मीरा दुबे की रचना "सुखी जीवन का आधार, सकारात्मक विचार", तथा श्री अरविंद कुमार उपाध्याय की कविता "कलयुग का चर्मोत्कर्ष" अति सराहनीय हैं। गृह पत्रिका प्रयास निरंतर प्रकाशित होती रहे, ये हमारी सुभकामनाएं है।

कार्यालय महानिदेशक (लेखापरीक्षा)
(केन्द्रीय प्राप्ति), नई दिल्ली

आपके चंद सराहनीय पत्र - हमारे लिए महत्वपूर्ण

आपके पत्र सं./हिन्दी/गृह पत्रिका–प्रयास/8–2010/25 से 139 दिनांक 18.10.2013 के साथ आपके कार्यालय की पत्रिका प्रयास का तृतीय अंक प्राप्त हुआ।

पत्रिका के आवरण पृष्ठ एवं राजभाषा गतिविधियों से संबन्धित छायाचित्र अत्यन्त मनमोहक हैं। इस अंक में समाविष्ट रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री सी०एस० त्रिपाठी का लेख विश्व मंच पर उभरती हिन्दी, कु० रेखा का लेख नारी सशक्तिकरण–हकीकत या वहम, श्री प्राचीश सिंघल का लेख धन की यादें नहीं होती पर अनुभव की होती हैं, श्रीमती मीरा दुबे का लेख सुखी जीवन का आधार, सकारात्मक विचार तथा श्री अजय त्यागी का संस्मरण लेख एक अनोखी यात्रा विचारप्रधान लेख हैं। मजबूर, पापा की प्यारी, आजादी के बाद का भारत, फूलों और शूलों की बातें तथा आज के हालात देखिये कविताएं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम सम्पादन व संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मध्यप्रदेश, ग्वालियर

आपके चंद सराहनीय पत्र - हमारे लिए महत्वपूर्ण

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका "प्रयास" का तृतीय अंक प्राप्त हुआ है जिसे संख्या हिन्दी/गृह पत्रिका–प्रयास/8–2010/25 से 139, दिनांक 18.10.2013 के साथ संलग्न करके भेजा गया है। पत्रिका का कवर–पृष्ठ एवं मुद्रक बहुत ही सुंदर है। इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं एक से एक बढ़कर हैं। इन रचनाओं में से कुछ रचनाएं ऐसी हैं जो कि बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं, जैसे कि श्री अरविन्द कुमार मिश्र की 'हिन्दी भाषा–एक अविरल प्रवाह', श्री अशोक कुमार की 'क्या लिखूं', कु. रेखा की 'नारी सशक्तिकरण–हकीकत या वहमश, श्रीमती संजु रानी की 'अपनी छवि को बनाओ बेहतर', कुमारी रश्मि दुबे की कविता 'पापा की प्यारी', श्री अरविन्द कुमार उपाध्याय की 'फूलों और शूलों की बातें' जैसी रचनाएं बहुत पसंद आई हैं।

पत्रिका के उत्तरोतर प्रगति के लिए हमारी शुभकामनाएं।

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
बांद्रा–कुर्ला संकुल, मुंबई

आपके चंद सराहनीय पत्र - हमारे लिए महत्वपूर्ण

आपके आपके द्वारा भेजी गयी गृह पत्रिका 'प्रयास' के तृतीय अंक की प्राप्ति हुई, एतदर्थ धन्यवाद। यद्यपि पत्रिका का आवरण, पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र एवं सभी रचनाएं सराहनीय हैं तथापि श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय द्वारा रचित कविता "मजबूर", श्री शरजील सलीम की "बात ही कुछ और है", श्री अरविन्द कुमार उपाध्याय की "कलयुग का चरमोत्कर्ष" तथा कु. रेखा की "नारी सशक्तिकरण हकीकत या वहम" अत्यन्त प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के संपादक मंडल एवं रचनाकारों के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र)
पश्चिम बंगाल

आपके चंद सराहनीय पत्र - हमारे लिए महत्वपूर्ण

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'प्रयास' का तृतीय अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

पत्रिका के लिए तस्वीरों का चयन प्रशंसनीय है, जिसमें प्राकृतिक चित्रों के अतिरिक्त धार्मिक स्थलों के चित्र भी प्रातः स्मरणीय हैं। रचनाओं की सूची में निम्नलिखित रचनाएं सराहनीय हैं–

नारी सशक्तिकरण–हकीकत या वहम	–	कु० रेखा
गरीब की ईमानदारी	–	श्री प्रवीण कुमार श्रीवास्तव
भ्रष्टाचार का वायरस	–	श्री प्रभाकर दुबे
यात्रा संस्मरण	–	श्री रविशंकर
विश्व मंच पर उभरती हिन्दी	–	श्री सी०एस० त्रिपाठी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)
झाँसी रोड, ग्वालियर

आपके चंद सराहनीय पत्र - हमारे लिए महत्वपूर्ण

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका 'प्रयास' के तृतीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं आकर्षक एवं पठनीय हैं। मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षणीय है। इसके अलावा इसमें प्रकाशित रचनाएं खास करके सी.एस. त्रिपाठी की विश्व मंच पर उभरती हिन्दी, अशोक कुमार की क्या लिखूँ, कु० रेखा की नारी सशक्तिकरण–हकीकत या वहम, रश्मि दुबे की पापा की प्यारी, तथा संदीप सिंह की ज़िंदगी और मौत, आदि रचनाएं पठनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका के अच्छे सम्पादन तथा साज सज्जा के लिए सम्पादक मण्डल को बधाई। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओड़ीशा, भुवनेश्वर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	भारत देश महान	अगम सिंह	1
2.	बदलाव की बयार	संतोष कुमार गुप्ता	2
3.	सुख बनाम सुविधाएं	रेखा	6
4.	बेटी की महत्ता	अलका सक्सेना	7
5.	आधुनिक दोहे (व्यंग्यात्मक)	अरविन्द कुमार उपाध्याय	8
6.	गंगा अवतरण	आस्था बिष्ट	9
7.	सामाजिक परिवर्तन की एक छोटी सी कोशिश	प्रवीण कुमार श्रीवास्तव	10
8.	ईश्वर सर्वत्र व्याप्त	प्रशान्त जोशी	11
9.	लक्ष्य	पवन कोठारी	12
10.	हरियाली तीज	नीरा अग्रवाल	13
11.	कामकाजी महिलाएं बनाम घरेलू महिलाएं	रेखा	14
12.	कविता सृजन	नित्यानंद सिंह	16
13.	उन गुजरे रिव्यू के लम्हों में	मदन सिंह गर्ब्याल	17
14.	एक कदम बचपन की ओर	अरविन्द कुमार उपाध्याय	19
15.	प्रकृति का महत्व	नित्यानंद सिंह	22
16.	बेटी पिता से	हेमलता गुप्ता	23
17.	शबाबे दून	मदन सिंह गर्ब्याल	24
18.	सफ़र	सतेन्द्र कुमार	25
19.	राष्ट्रभाषा	अश्विनी कुमार पाण्डेय	26
20.	लोकतंत्र	रेखा	27

21.	रहिमन पानी रखिये	अशोक कुमार	29
22.	देहरादून अवश्य आना	संजू रानी	33
23.	अनमोल रिश्ता	नीरा अग्रवाल	34
24.	गहराता जल संकट–एक चिंतन	सी.एस. त्रिपाठी	35
25.	माँ की मूरत सारी हैं	प्रभाकर दुबे	37
26.	बाल मन	गोविंद कुमार सिंह	38
27.	गज़ल	सुशील देवली	39
28.	गज़ल	विनीत कुमार राही	40
29.	एक प्रार्थना पत्र ऐसा भी	कलवंत सिंह	41
30.	नंदा राजजात–धार्मिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	डी.एन. मिश्रा	43
31.	कौन पूछे जाके नदियों के किनारों से	अश्विनी कुमार पाण्डेय	46
32.	ईर्ष्या एवं प्रतिशोध की भावना से बचें	प्रभाकर दुबे	47
33.	नारी से ही चलता सारा जहान है	चित्रा दुबे	50
34.	मैं न होता	महावीर सिंह रावत	52
35.	समय का सदुपयोग	आरती बिष्ट	53
36.	सिसकती हिन्दी	अलका श्रीवास्तव	55
37.	विनाश की ओर	योगेश त्यागी	56
38.	माँ का कर्ज	हेमलता गुप्ता	57
39.	लोकतंत्र का महापर्व	सूर्यपाल	58
40.	करुणा की महत्ता	अजय कुमार मिश्रा	59
41.	आईना ज़िंदगी का	हिना सलीम	60

मुख पृष्ठ : महासू देवता मन्दिर, हनोल (उत्तराखण्ड)
पार्श्व पृष्ठ : कोटेशवर, रूद्रप्रयाग (उत्तराखण्ड)
छायांकन : अनूप सिंह चौहान (मुख पृष्ठ)
दिनेश रमोला (पार्श्व पृष्ठ)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी हैं, उनसे संपादक मण्डल और प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं

भारत देश महान

श्री अगम सिंह,
लेखापरीक्षक

सारी दुनिया के दरम्यान, मेरा देश महान।
इसकी आन, बान, शान पर, कुर्बान हम कुर्बान।।

जन्में यहाँ पर राम, लक्ष्मण, कृष्ण जैसे वीर।
गुरु नानक, गोविन्दसिंह, बुद्ध और महावीर।। इसकी आन, बान..........

सोना, चाँदी, हीरा, तांबा सबकी यहाँ पर खान।
दिल्ली इसकी राजधानी, नरेन्द्र मोदी जी प्रधान।।

सुनो–सुनो ऐ देश के वीरों, भेदभाव कर दूर।
सीमा पर जो कदम बड़े, शत्रु को कर दो चूर।।

देना जवाब करारा, चाहे हो चीन या पाकिस्तान।
सरहद की रक्षा करने को, चाहे देनी पड़े हमें जान।। इसकी आन, बान..........

एक समय था देश मेरा, सोने की चिड़िया कहलाया।
दुष्ट फिरंगियों ने लूटा देश, माल विदेशों मे पहुंचाया।।

स्विस बैंक से काला धन हम, लायेंगे हिन्दुस्तान।
विश्व मंच पर भारत माँ का होगा अब गुणगान।। इसकी आन, बान..........

कह अगम प्रिय देश मेरा, मुझे प्राणों से भी प्यारा है।
भारत माँ की कोख में जन्में, यह सौभाग्य हमारा है।।

देश की गरिमा धूमिल न हो, मन में लिया ठान।
व्यर्थ न जाने देगें, अमर शहीदों का बलिदान।। इसकी आन, बान..........

सारी दुनिया के दरम्यान, मेरा देश महान।
इसकी आन, बान, शान पर, कुर्बान हम कुर्बान।।

बदलाव की बयार

श्री सन्तोष कुमार गुप्ता,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत को आजादी मिले छह दशक से ज्यादा का समय हो चुका है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र, विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था, सूचना प्रौद्योगिकी का बादशाह इत्यादि कई ऐसे विशेषण हैं जिन्हें सुनकर हर भारतवासी गर्व महसूस करते हैं। परन्तु कई ऐसी सामाजिक रूढ़ियां समाज में आज भी पल रहीं हैं जो एक सभ्य समाज के ऊपर काला धब्बा हैं। इन रूढ़ियों मे बाल–विवाह एक कटु यथार्थ है। अपरिपक्व उम्र की शादियाँ ऐसे दुश्चक्र (vicious cycle) को जन्म देती हैं जिससे पूरी उम्र निकल पाना असंभव हो जाता है। यह त्रासदी अगली पीढ़ी पर भी अपना दुष्प्रभाव छोड़ती है।

धरमपुर गाँव को हिंदुस्तान के उन हजारों गावों में शुमार किया जा सकता है जहां बिजली के दर्शन आजादी के छह दशक बीत जाने के बाद हुए। बिजली के आने के बाद कुछ ठीक–ठाक परिवारों में टेलीविज़न, फ्रीज़ इत्यादि भी आ गए। लोगों ने टेलीविज़न को अपने दालान या बरामदे में लगा रखा था। जिसे भी देखना हो वो वहाँ रखी हुई चारपाई, कुर्सी या चटाई पर अपनी वरिष्ठता के हिसाब से खुद ही विराजमान हो जाता था।

आज गणतन्त्र दिवस के दिन टेलीविज़न पर रंग–बिरंगी झाँकियों का दृश्य दिखाया जा रहा था। बड़की काकी और बहुत सारे लोग राज पथ से गुजरने वाले इस विहंगम दृश्य को देख अभिभूत थे। सेना, मिसाइलें, संस्कृति, तकनीकी इत्यादि बहुत कुछ था इन झांकियों में। सभी दृश्यों को अपने में समेटते हुए लोगों के चेहरे दर्प की आभा से दमक रहे थे और क्यों न हों यह गाँव पिछले कई वर्षों से खेल–कूद, स्वरोजगार, कन्या–शिक्षा जैसे क्षेत्रों में पड़ोसी गावों से बाजी मार रह था और इसका श्रेय एक ऐसी लड़की को जाता है जिसका जीवन बाल–विवाह की वेदी पर बलि चढ़ गया था। लेखक ने उसी के अदम्य साहस की कहानी को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

धरमपुर गाँव में ज़्यादातर कच्चे मकान थे। गाँव के बीच में कुछ पक्के मकानों की कतार थी। इन एक–मंजिले घरों की छतें सटी हुई थीं। इन सटी हुई छतों पर शाम को अक्सर चौपाल जैसा माहौल हो जाता था। एक छोर पर औरतों–लड़कियों का जमावड़ा होता तो दूसरी तरफ

बुजुर्गों—जवानों का। बीच मे छोटे बच्चे अपनी बाल—क्रीड़ाओं में तल्लीन रहते। अमूमन गाँव के सारे ब्रेकिंग न्यूज़ भी इसी चौपाल में सुने—सुनाये जाते थे।

बड़की काकी अपेक्षाकृत समृद्ध और सबके दुख—सुख में साथ देने वाली सुसभ्य महिला थीं। खेती—बाड़ी से अच्छी आमदनी थी। बड़े काका और बड़ी काकी बहुत ज्यादा पढे लिखे तो नहीं थे पर विचारों से काफी प्रगतिशील थे।

बड़की काकी की इमली चाची से खूब बनती थी। उस समय सावन के महीने की बूँदा—बाँदी हो रही थी। दोनों औरतें संयुक्त छत पर छज्जे के नीचे बैठ कर अपनी लड़कियों के सिर में जूएँ ढूँढने के उपक्रम मे व्यस्त थीं। बड़की काकी की लड़की कुसुम आठवीं दर्जे की और इमली चाची की लड़की रेनू सातवीं दर्जे की एक ही विद्यालय की छात्राएं थीं। स्वभाव से कुसुम शांत और गंभीर लेकिन रेनू उतनी ही बातूनी और चंचल। जूएँ ढूँढने के साथ ही दोनों औरतों का बात—चीत का क्रम आगे चलता चला गया।

इमली चाचीः दीदी! हवा मे ठंडक आ गयी है। परसों तो बहुत ही उमस—गर्मी रही।

बड़की काकीः हाँ, सावन का महीना है। कल रात को खूब बारिश हुई रही। इसी से ठंडक हो रही है।

इमली चाचीः कुसुम बेटी, जरा नीचे चली जा और बढ़िया सी चाय बना ला।

कुसुमः जी चाची! अभी लायी।

इतना कह कर कुसुम चाय बनाने के लिए सीढ़ियों से नीचे उतर गयी।

इमली चाचीः दीदी एक बात कहूँ। कुसुम अब बड़ी हो गयी है। कोई रिश्ता देख रही हो कि नहीं?

बड़की काकीः (आश्चर्य से) क्या कह रही हो! इसकी शादी की बात इसके बाबू जी के कानों में पड़ गयी तो गज़ब हो जाएगा। वो तो अभी भी कुसुम को अपने हाथों से खाना खिलाते हैं। अब तुम्हीं बताओ....।

इमली चाचीः दीदी! बच्चे तो चाहे कितने ही बड़े क्यों ना हो जाएँ माँ—बाप के लिए तो बच्चे ही रहते हैं। फिर लोक समाज भी तो देखना है कि नहीं? इसकी उम्र में रेनू मेरी गोद में आ गयी थी। आप को तो सब मालूम ही है।

चाची इस बीच काकी के चेहरे पर नजरे गड़ाए उनके मनोभावों को समझने की पुरज़ोर कोशिश कर रहीं थीं। बड़की काकी के माथे पर चिंता की सलवटें देख चाची ने अपना तुरुप का इक्का फेंका।

इमली चाचीः कलयुग का जमाना है। कोई ऊँच–नीच हो जाये तो हम मुँह दिखाने के लायक भी न रहेंगे। हमारी रेनू को ही देख लो, उसका रिश्ता अभी से हमने तय कर दिया है। सोचा है अगले साल शादी और बाद में गौना(विदाई) कर देंगे।

बड़की काकीः (गहरी सांस लेते हुए...) तुम किस्मत वाली हो रेनू की अम्मा। हमारे यहाँ कोई भाग दौड़ करने वाला तो है नहीं और फिर अच्छा रिश्ता ढूंढना भी तो कोई आसान काम नहीं है। ऊपर से कुसुम के बाबू जी...।

इमली चाचीः कुसुम के बाबू जी को मनाना तुम्हारा काम है दीदी। वैसे मेरी नज़र मे एक बहुत अच्छा रिश्ता है। अगर तुम कहो तो बात को आगे बढ़ाऊँ।

बड़की काकीः ठीक है तुम बात करो, मैं कुसुम के बाबू जी को समझाती हूँ।

इमली चाची ने अपने ही रिश्ते में कुसुम की शादी तय करा दी। आदमी का नाम रवि था और कुल सात लोगों का परिवार – रवि, दो भाई, एक बहन, माँ–बाप और एक बूढ़ी दादी। रवि की माँ और दादी में रोज झगड़ा होता और रवि का पिता रोज शाम को शराब के नशे में हंगामे खड़ा करता। चीनी मिल से रिटायर होने के बाद रवि के पिता ने मिल में ही उसे परचियाँ काटने का काम दिला दिया। इमली चाची ने रवि को 'सुपरवाइजर' बता कर रिश्ता तय करा दिया। लेकिन उसकी नौकरी, अधिक उम्र, पारिवारिक कलह और दुहाजू होने की बात पर बड़ी सफाई से पर्दा डाल दिया। बड़की काकी की जिद और हठ के आगे कुसुम के बाबू जी की एक न चली। इस सब घटनाक्रम के बीच कुसुम काफी गुमसुम सी रहने लगी थी।

खैर जैसे–तैसे शादी भी सम्पन्न हो गयी। कुसुम के माता–पिता ने अपने सामर्थ्य से बढ़ कर दान–दहेज दे कर कुसुम को विदा किया।

ससुराल पहुँच कर कुसुम ने अपने आप को दूसरी ही दुनिया में पाया। सुबह से देर रात तक काम कर के कुसुम की कमर टूट जाती। सास–ननद के व्यंग्य–बाण कुसुम के मर्म–स्थल को बींधते रहते। रवि रात को यार दोस्तों के साथ महफिल जमा कर देर से लौटता था। कुसुम के लिए दो प्यार के बोल उसके मुंह से कभी नहीं निकले।

वक्त का पहिया धीरे–धीरे चलता रहा। शादी के तीसरे साल कुसुम के पाँव भारी हो गए। यह खबर कुसुम के मायके पहुंची तो वहाँ से खाने–पीने का ढेर सारा सामान लेकर माँ–बाबू जी मिलने आए। अपनी लड़की की हालत देख कर और कुसुम के ससुराल का माहौल देख कर दोनों की आँखों मे आँसू आ गए। फिर भी दोनों भारी मन से बिना कुछ कहे वापस लौट गए।

गर्भावस्था के दौरान आई कमजोरी की वजह से डाक्टरों ने कुसुम को 'ड्रिप' चढ़ाया। कुसुम की सास ने ड्रिप को नोंच कर फेंक दिया, यह कह कर कि महारानी कमजोरी की नौटंकी कर

रही हैं। किसी सहृदय पड़ोसी ने कुसुम की दयनीय हालत देख उसके माँ–बाप को सूचना भिजवायी। कुसुम के बाबू जी उसे अपने साथ ले आए। जच्चगी के दौरान कुसुम कम उम्र के कारण मरने के कगार पर जा पहुंची। उसकी कोख में पल रहा बच्चा अजन्मे ही इस दुनिया को छोड़ गया।

अब कुसुम को अपने जीवन में चारों तरफ अंधकार ही अंधकार नज़र आ रहा था। कुसुम के ससुराल से कोई पूछने नहीं आया था। एक तरह से कुसुम ने अपने आप को सारी दुनिया से अलग–थलग कर लिया था। माँ–बाबू जी से अपनी लाडली बेटी का दुख देखा न जाता। एक दिन बाबू जी ने कुसुम को किताबों से भरा थैला पकड़ाया और रोते हुए कहा–'कुसुम बेटा! हो सके तो हमें माफ कर देना। तुम्हारी कम उम्र में शादी कर के हमने बहुत बड़ा गुनाह किया है। इस पाप का बोझ अब मुझ से उठाया नहीं जाता। तुम्हारा दाखिला मैंने फिर से पढ़ाई के लिए करा दिया है। ....मेरी नजर में यही एक रास्ता था तुम्हारी खुशियाँ लौटाने का। बोलते–बोलते बाबू जी का गला रुँध आया। आज बाप–बेटी गले लग कर खूब रोये। आंसुओं के साथ ही कुसुम के मन का विषाद भी काफी कुछ बह गया।

कुसुम पूरे मनोयोग से पढ़ाई में लग गयी। खाना–पीना भूल कर पूरी तन्मयता से किताबों की दुनिया में खो गयी। बाबू जी फिर से कुसुम को अपने हाथों से खाना खिलाने लगे थे। ससुराल से संबंध खत्म हो चुका था। बाबू जी ने पहल करके इस बेमेल रिश्ते का कानूनी रूप से विसर्जन करा दिया। अब कुसुम के सामने खुला आसमान था...दूर क्षितिज तक। वक्त सरकता गया। कुसुम ने लॉ में फर्स्ट–क्लास पोस्ट–ग्रेजुएशन के बाद प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठना शुरू किया। जल्द ही उसे ज्यूडीशियरी की प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिली। सहायक जज बनने के बाद जब कुसुम गाँव वापस लौटी तो उसका खूब स्वागत हुआ। अखबारों में फोटो सहित कुसुम की सफलता का समाचार छपा। कुसुम ने अपने ज्ञान और संपर्क का इस्तेमाल गाँव की भलाई के लिए किया।

बहुत दिनों बाद आज फिर उसी छज्जे के नीचे बैठ कर माँ–बाप–बेटी चाय पी रहे थे। चारपाई पर बैठी बड़की काकी ने कहा–'आज बहुत दिनों बाद ऐसी ठंडी और सुकून वाली बयार (हवा) चल रही है'।

बाबू जी ने कहाः 'कुसुम की माँ ये कोई मामूली बयार नहीं.... ये तो बदलाव की बयार है'। और कुसुम माँ–बाबू जी की बातें सुनते हुए दूर क्षितिज पर नजरें गड़ाए शायद आसमान की लंबाई–चौड़ाई को मापने की कोशिश कर रही थी।

सुख बनाम सुविधाएं

सुश्री रेखा,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

सुख एक विस्तृत परिभाषा वाला शब्द है तथा इसका अर्थ भी सभी के लिए अलग–अलग है। इसका शाब्दिक अर्थ जितना सूक्ष्म है, वास्तविक अर्थ उतना ही व्यापक। सुख का क्षेत्र भी अत्यंत विशाल है। सुख एक मानसिक तथा हार्दिक अनुभूति है, जिसे आँखों से देख पाना संभव नहीं है। इसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। सुख को उपलब्ध कराना भी बहुत ही कठिन कार्य है। सुख के स्रोत भी भिन्न–भिन्न होते हैं, तथा यह व्यक्ति–प्रति–व्यक्ति परिवर्तित होता रहता है। सुख के अर्थ भी बदलते रहते हैं। जो वस्तु एक मनुष्य के सुख का मार्ग प्रशस्त करती है दूसरे के लिए वह दुख का पर्याय भी बन सकती है। सुख के कारण तथा अवस्थाएं भी अनेक प्रकार की हो सकती हैं। यह भौतिक हो सकता है, आध्यात्मिक, भावनात्मक या अन्य प्रकार का हो सकता है। सुख को किसी निश्चित दायरे में बांधना मुश्किल है। इसका कोई निश्चित पैमाना भी नहीं है।

सुख व सुविधाओं का अंतर स्पष्ट करने के लिए पहले सुविधाओं पर थोड़ा प्रकाश डाल लेना चाहिए। सुविधाओं का अर्थ प्राथमिक दृष्टि से भौतिक संसाधनों से लगाया जाता है। अर्थात अधिकाधिक सुविधाओं की प्राप्ति हेतु अधिकाधिक भौतिक संसाधन आवश्यक हैं। भौतिक संसाधनों के पश्चात सुविधाओं की व्यवस्था के क्रम में अगला स्थान मानसिक व हार्दिक सुविधाओं का आता है, जिसकी भूमिका अपेक्षाकृत गौण मानी जाती है। सुख और सुविधाओं का अंतर स्पष्ट इस प्रकार किया जा सकता है कि "सुविधा के रूप में हम अच्छे बिस्तर का प्रबंध तो कर सकते है परंतु अच्छी नींद केवल सुखी इन्सान को ही प्राप्त हो सकती है।" सुख और सुविधाओं के अंतर को अधिक विस्तार से प्रस्तुत करने के लिए यह कहा जा सकता है कि सुविधाएं सुख का हिस्सा होती हैं, सम्पूर्ण सुख नहीं। सम्पूर्ण सुख किसी व्यक्ति को तभी प्राप्त हो सकता है जब वह मानसिक, हार्दिक, आध्यात्मिक रूप से सम्पन्न हो, परिपूर्ण हो। मानवीयता से ओत–प्रोत तथा विकारों से मुक्त व्यक्ति ही सुख या सही मायने में सच्चे सुख का अनुभव कर सकता है। सुविधा युक्त सुख क्षणिक होता है तथा स्थायी भी नहीं होता। मानव कुछ क्षणों या कुछ समय उपरांत ही दूसरी सुविधा से सुख प्राप्त करने को लालायित हो उठता है और प्राप्त न होने पर दुखी होता है। सुख को परिभाषित करना अत्यंत कठिन है, जबकि सुविधाओं को

परिभाषित किया जा सकता है। वर्तमान समाज में सुख प्राप्त करने हेतु सुविधाओं को जुटाने की होड़ मची हुई है, जिसके परिणाम स्वरूप समाज में विसंगतियां उत्पन्न हो रही हैं। आज के समय में लोगों सुख की नयी परिभाषाएं गढ़कर लोगों को दिगभ्रमित किया जा रहा है। जिसका परिणाम हम आये दिन देखते–सुनते रहते हैं।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि अगर को सुख प्राप्त करना है तो सुविधाओं का उपभोग केवल माध्यम के रूप में करना चाहिए और स्वयं को सुविधाओं का दास नहीं अपितु स्वामी बना कर रखना चाहिए जिससे यह प्रतीत हो कि बिना सुविधा के भी हम सुख प्राप्त कर सकते हैं।

बेटी की महत्ता

श्रीमती अलका सक्सेना,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ओस की एक बूँद सी होती हैं बेटियाँ,
स्पर्श खुरदरा हो तो रोती हैं बेटियाँ।

रोशन करेगा बेटा एक कुल तो,
दो–दो कुलों की लाज होती हैं बेटियाँ।

कोई नहीं होता एक दूसरे से कम,
हीरा है अगर बेटा तो मोती हैं बेटियाँ।

काँटों की राह पर खुद चलती रहेंगी,
पर औरों की राह में फूल बोती हैं बेटियाँ।

विधि का विधान है यही दुनिया की रस्म है,
मुट्ठी में भरी नीर सी होती हैं बेटियाँ।

संसार ने यह कैसी रीत है बनाई,
अपने होते हुए भी पराई हैं बेटियाँ।

आधुनिक दोहे व्यंगात्मक

श्री अरविन्द कुमार उपाध्याय,
लेखापरीक्षक

भगवन तेरे द्वार पर आया तेरा भक्त,
ऐसा दो वरदान मुझे, रहूँ सदा मैं मस्त।

मेरी पूजा व्यर्थ न जाये ऐसा करो उपाय,
इस जीवन में इतना दे दो सात पीढ़ी तक खाय।

कभी थमे ना इस जीवन में नोटों की बरसात,
नौकरी, बंगला और गाड़ी का रहे हमेशा साथ।

इस बैरी संसार के बैरी हो जायें ढ़ेर,
इस जंगल में पनप न पाये दूजा कोई शेर।

ऐसा कोई जाल बिछाओ जनता समझ न पाय,
वोटिंग की जब बारी आये, मुझे ही चुना जाय।

मैं कुर्सी से, कुर्सी मुझसे ऐसे दो चिपकाय,
मरते दम तक हमको कोई जुदा न करने पाय।

सब इच्छाएँ पूरी कर दो, हे! मेरे भगवान,
ताकि यूँ ही करता जाऊँ सदा तेरा गुणगान।

कर दो मुझ पर आखिर में एक छोटा एहसान,
कभी न मेरा असली चेहरा कोई सके पहचान।

इन अनोखी फरियादों से वो भी हुआ हैरान,
कहाँ जा छुपा आज तक कोई न पाया जान।

गंगा अवतरण

आस्था बिष्ट, बहिन आरती बिष्ट,
एम.टी.एस.

बहती थीं तुम स्वर्ग में, रहती थी कमण्डल में।
ब्रह्म देव ने मुक्त किया भेज दिया भूमण्डल में।।

ब्रह्म कमण्डल में से निकली तुम शोभित हुए शिवजी के सिर पर।
धरती पर आयी जब तुम, हिमगिरि के हिम से गिरकर।।

वीर भगीरथ घोर तपस्या जिस कारण धरती पर आयी।
गंगोत्री से देवप्रयाग तक भागीरथी तुम कहलायी।।

विष्णु, पाप नाशिनी, मोक्ष दायिनी कहलायी।
ऋषि नारद ने महिमा गायी, जो सबके मन को भायी।।

परोपकार की रहे भावना सभी को तुमने सिखलायी।
आगे बढ़ते रहो सदा तुम राह सभी को दिखलायी।।

राजा शांतनु की थी रानी तुम देवव्रत की थी माता।
महाभारत में हुए भीष्म जो कई वेदों के थे ज्ञाता।।

मन में अभिलाषा इतनी नित्य करें जो दर्शन।
वन्दन मिलकर सभी करें हम तुमको पुष्प करें अर्पण।।

गंगोत्री से निकल रही माँ गंगा तेरी निर्मल धारा।
जगह–जगह पर बाँध बन रहे जिनसे होगा उजियारा।।

माँ गंगा तुम बंधी नहीं मात्र एक विश्राम स्थल।
नित्य करें हम तेरा वन्दन, स्मरण करें तेरा पल–पल।।

गंगोत्री से निकल रही तुम, पहुँच रही हो गंगा सागर।
भव्य सुरंगों में बहकर तुम, भूल रही हो हिम की गागर।।

मैदानी भागों में बहती मिटती है धरती की तपन।
गंगोत्री से गंगासागर तक तुमको करते हैं नमन।।

जल संचय और विद्युत ऊर्जा इनसे होगा देश महान।
टिहरी जल विकास निगम भी नवरत्न हो ऐसा हमको दे वरदान।।

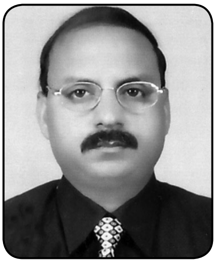

सामाजिक परिवर्तन की एक छोटी सी कोशिश

श्री प्रवीण कुमार श्रीवास्तव,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं उम्र के लगभग 50वें वर्ष में पहुच चुका हूँ। यूँ तो सामाजिक परिवर्तन के लिए 50 वर्ष बहुत ज्यादा नहीं होता किन्तु इतने कम अन्तराल में ही समाज में हुए व्यापक परिवर्तन को महसूस किया जा सकता है। कहा जाता है कि समाज की संरचना एवं उत्थान में संस्कृति एवं इतिहास का बहुत योगदान होता है। समाज की उत्कृष्टता हेतु हमें भी बचपन में महान पुरुषों (महात्मा बुद्ध, विवेकानन्द, भगवान राम इत्यादि) की जीवनी, उनके कृत्यों को पढ़ाया जाता था जिससे कि हम उनकी संस्कृति को अपने जीवन में उतार कर समाज के उत्थान में अपना योगदान दे सकें। कहा तो यह भी जाता है कि यह देश (भारत) विश्व का एक मात्र देश है जहाँ अधिकतम एवं श्रेष्ठतम ऋषि–मुनि, ज्ञानी, विदूषक पैदा हुए और यहीं पर सबसे अधिक ग्रन्थ, उपनिषद, वेद–पुराण यहाँ तक कि गीता एवं रामायण जैसी अनमोल ग्रंथों की रचना की गयी। कबीर एवं रहीम के दोहे तो आज भी चरितार्थ हैं। किन्तु इतनी सुदृढ़ संस्कृति एवं ज्ञान उपदेश के बावजूद इस देश में न केवल सामाजिक बल्कि नैतिक पतन बढ़ता गया। अविश्वास, क्रूरता, निर्लज्जता दुष्चरित्रता, लूट–खसोट, हत्या, बलात्कार एवं अमानवता ने समाज में अपना विकराल रूप धारण कर लिया। कहते हैं कि हमारा देश इक्कीसवीं सदी में आगे बढ़ रहा है जहाँ विकास ही विकास है। जहाँ समाज एवं संस्कृति का पतन हो, क्या उसे विकास कह सकते हैं? क्या यह विरोधाभासी नहीं है? अब प्रश्न उठता है कि जिस देश व समाज में अनंत महापुरूषों ने जन्म लिया हो और जहाँ उनकी ही जीवनी व ज्ञान की चर्चा की जाती रही हो वहाँ समाज की यह भयावह स्थिति कैसे हुई। उसने अपना असर क्यूँ नहीं छोड़ा। जहाँ की संस्कृति इतनी सुदृढ़ (शक्तिशाली) रही हो वहाँ समाज का विघटन, मानवता (नारी व बच्चों) का शोषण तथा बुजुर्गों का अपमान कैसे?

इन्हीं सब गुत्थियों में उलझा मैं इसके (सामाजिक पतन) कारणों को जानने एवं उसके उत्थान के लिए प्रयासरत रहते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि समाज के विकास (उत्थान) में शिक्षा का बहुत महत्व है और पीढ़ी–दर–पीढ़ी हमें जो शिक्षा दी जाती रही वह दिव्य पुरुषों/ महापुरुषों की जीवनगाथा से जुड़ी कहानियों के रूप में दी जाती रही जो एक इतिहास के रूप में हमारे सामने आती थी। फिर चाहे वह रामचरित हो, गीता हो, स्वामी विवेकानन्द की जीवनी हो या किसी अन्य की। कहानियां (इतिहास) सुनने में अक्सर अच्छी तो जरूर लगती

हैं किन्तु कहानियों–किस्सों को विरले ही कोई अपने जीवन में उतार पाता है, क्योंकि तत्समय वह प्रासंगिक होते हुए भी प्रांसगिक नहीं बन पाती। इन्हीं कारणों से वह व्यक्ति पर अपना प्रभाव नहीं डाल पाती। किन्तु यदि शिक्षा प्रणाली में थोड़ा सुधार करते हुए उन श्रेष्ठ एवं कर्तव्यपरायण महानुभावों व महापुरुषों की जीवनी सामने लायी जाये जो प्रत्यक्ष रूप में आपके सामने हों और उन्होंने अपने जीवन में वह सभी महान कार्य (अपेक्षित) किये हों या करने की कोशिश करते हैं तथा जो युवा एवं समाज को बार– बार प्रेरित कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर मदर टेरेसा, बिनोवा भावे, अन्ना हजारे इत्यादि। हो सकता है कि मेरा यह विश्लेषण एवं विचार अर्थहीन प्रतीत होता हो किन्तु सुधार की एक छोटी सी कोशिश भी कभी–कभी समाज में बड़ा परिवर्तन ला सकती है तथा इस सत्य को भी तो नकारा नहीं जा सकता कि प्रत्यक्ष में जो घटित/परिलक्षित होता है उसका प्रभाव समाज (हृदय) पर अप्रत्यक्ष में घटित (इतिहास में वर्णित) से ज्यादा होता है।

ईश्वर सर्वत्र व्याप्त

श्री प्रशान्त जोशी (एम०टी०एस०),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०)

भगवान नाम का भी व्यापार हो गया।
उसके नाम से लोगों का कारोबार हो गया।।

उसे सिर्फ मूर्तियों में बसा मत जानो।
दीन–दुखियों के अन्दर भी पहचानो।।

उसे भक्त के भाव की सिर्फ भूख है।
इन्सान जो न जान पाया, जीवन की वह चूक है।।

वह सच्चे भाव का अर्थ कहाँ जान पाया।
गरीब, असहयों में उसे कहाँ पहचान पाया।।

भगवान नाम का भी व्यापार हो गया।
उसके नाम से लोगों का कारोबार हो गया।।

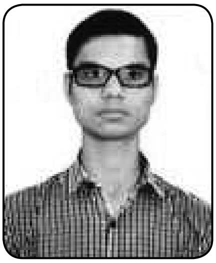

लक्ष्य

श्री पवन कोठारी,
लेखापरीक्षक

जीवन का उद्देश्य लक्ष्य है,
सबसे बढ़कर ध्येय लक्ष्य है।

सफलता के प्रयास में,
कुछ पाने की आस में,

दृढ़ निश्चय कर जो बढ़ा है,
साथ उसके ईश खड़ा है।

परिश्रम का लेकर सहारा,
चुनौतियों को हमने पुकारा।

सफलता के तुंग शिखर को उसने पाया है।
आत्मविश्वास का भाव जिसने खुद में जगाया है।

साहस व धैर्य की अब होगी परीक्षा,
लक्ष्य के लिए समर्पण ही है जीवन शिक्षा।

माना कि लक्ष्य–पथ पर पग–पग कई कठिनाई,
लक्ष्य पाया उसी ने जिसने खुद में इच्छा शक्ति जगाई।

जीवन मिला है एक बार तो हार मानना व्यर्थ है,

लक्ष्य को पा लेना ही पुरूषार्थ का वास्तविक अर्थ है।
क्योंकि............... जीवन का उद्देश्य लक्ष्य है,

सबसे बढ़कर ध्येय लक्ष्य है।

हरियाली तीज

श्रीमती नीरा अग्रवाल, पत्नी श्री संदीप गर्ग
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

काले बादल छाए गगन में, हरियाली तीज आई रे।
झूले पड़ गए बगियन में, मन में मस्ती छाई रे।।

देख घटाएँ मोर नाच उठे, पिहू–पिहू मन गाए रे।
कोयल भी अपनी वाणी में, मीठे गीत सुनाए रे।।

आँखों में कजरा, माथे पर बिंदिया, गोरी चूड़ी खनकाए रे।
जितना भी सजती है सजनी, श्रृंगार कम पड़ जाए रे।।

चढ़ा रंग पिया प्रेम का, हाथों की मेहंदी गहराए रे।
दौड़ा आया फिर से बचपन, मुँह में भरी मिठाई रे।।

मन में प्रीत, होठों पे गीत, झूले पे पेंग बढ़ाई रे।
आज न रोको पिया मुझे तुम, मन में मस्ती छाई रे।।

काले बादल छाए गगन में, हरियाली तीज आई रे
झूले पड़ गए बगियन में, मन में मस्ती छाई रे।।

उत्कृष्टता वो कला है जो प्रशिक्षण और आदत से आती है। हम इसलिए सही कार्य नहीं करते कि हमारे अन्दर अच्छाई या उत्कृष्टता है, बल्कि वो हमारे अन्दर इसलिए हैं क्योंकि हमने सही कार्य किया है। हम वो हैं जो हम बार बार करते हैं। इसलिए उत्कृष्टता कोई कार्य नहीं बल्कि एक आदत है।

अरस्तु

कामकाजी महिलाएं बनाम घरेलू महिलाएं

सुश्री रेखा,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

महिलाएं संसार में विद्यमान मानव जाति का आधा हिस्सा हैं, वे इस संसार में उन सब अधिकारों और कर्तव्यों की हकदार हैं जो मानव जाति के लिए होने चाहिए और उनके लिए प्राप्य भी हैं। महिलाएं कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र हैं, जिसे वे अपनी अस्मिता के विरुद्ध न मानती हों तथा जिससे उनके तथा सामाजिक ढांचे का अतिक्रमण न होता हो। फिर भी प्रायः देखा जाता है कि समाज उनके कार्यों का मूल्यांकन जरूरत से ज्यादा करने को उद्धत रहता है। समाज के अनुसार महिलाएं दो प्रकार की होती हैं, तथा यह वर्गीकरण उनके द्वारा कृत कृत्यों के आधार पर किया गया है। प्रथम कामकाजी महिलाएं तथा द्वितीय घरेलू महिलाएं। कामकाजी महिलाएं उन महिलाओं को कहा जाता है जो किसी सरकारी या गैर–सरकारी संस्था में कार्यरत हैं तथा परिणाम स्वरूप पारितोषिक प्राप्त करती हैं। जबकि घरेलू महिलाएं उन्हें कहते हैं जो घर में ही रहकर अपने दैनिक कार्यों का निपटान करती हैं और कोई पारितोषिक भी नहीं प्राप्त करती हैं।

यह वर्गीकरण निहायत ही गैर–जरूरी है क्योंकि द्वितीय वर्गीकरण की महिलाओं को प्रायः कमतर आँका जाता है। सही दृष्टिकोण से देखा जाए तो घरेलू महिलाओं द्वारा सम्पन्न कार्यों का मूल्यांकन किया ही नहीं जा सकता। इनका योगदान अमूल्य होता है। इन्हें किसी भी पारितोषिक से प्राप्त नहीं किया जा सकता। कामकाजी महिलाओं से प्राप्त धन की पूर्ति का विकल्प ढूँढा जा सकता है परन्तु घरेलू महिलाओं से प्राप्त धन की पूर्ति का कोई विकल्प नहीं हो सकता। महिला के कामकाजी होने से उसका स्वयं का तो सर्वांगीण विकास हो जाता है परन्तु परिवार उनके सुखों से वंचित रह जाता है। घरेलू महिला विभिन्न प्रकार के अनुभवों से वंचित रह जाती है जबकि परिवार का सर्वांगीण विकास होता है।

महिला का कामकाजी होना परिवार के लिए अनिवार्य है, अथवा लाभप्रद, बजाय इसके कि उसका घरेलू होना, इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें अतीत में जाना पड़ेगा। अतीत के गर्त में जाने पर हम जान पायेंगे कि महिलाओं को घरेलू कामकाजों को छोड़कर घर की चहारदीवारी को लांघने के लिए क्यों मजबूर होना पड़ा। इसके उत्तर के लिए उन दशाओं को

जानना पड़ेगा जो इस परिवर्तन का कारण बनी, इन सब पहलुओं पर गौर करने पर हम पाएगें कि इन सब परिस्थितियों की जिम्मेदार पुरुष वर्ग की वह मानसिकता है जो यह सोचती थी कि महिलाएं कामकाजी क्षेत्र में वह प्रदर्शन नहीं कर सकती जो पुरुष कर सकते हैं, पुरुष सोचते थे कि महिलाएं उस मुकाम तक नहीं पहुँच सकती जो पुरुष ने अब तक प्राप्त किया है। पुरुष की इस सोच और अंहकार को तोड़ने के लिए महिलाओं ने अपने लिए पुरुषों द्वारा खींची गयी लक्ष्मण रेखा को तोड़ने का संकल्प लिया और उसे मूर्त रूप देने का साहस भी किया। उन्होने पुरुषों को दिखा दिया कि वे न सिर्फ पुरुषों को जन्म दे सकती हैं बल्कि जरूरत पड़ने पर उन्हें किसी भी मुकाम पर पछाड़ भी सकती है। कामकाजी महिलाएं, घरेलू महिलाओं की अपेक्षा थोड़ी उग्र हो सकती हैं परन्तु जोखिम उठाने की उनकी क्षमता घरेलू महिलाओं की अपेक्षा कहीं अधिक होती है। घरेलू महिलाएं सहनशीलता की दृष्टि से कामकाजी महिलाओं से कहीं अधिक सहनशील होती हैं। घरेलू महिलाएं आत्मविश्वास की दृष्टि से कामकाजी महिलाओं की तुलना में थोड़ी कमजोर होती हैं, परन्तु भावनात्मक दृष्टि से कामकाजी महिलाओं का स्थान कहीं अधिक ऊँचा होता है। कामकाजी महिलाएं परिवार के संगठन को बरकरार रखने में घरेलू महिलाओं के सापेक्ष कमजोर होती हैं। इस स्थिति के लिए पूर्ण रूप से कामकाजी महिलाएं दोषी नहीं होतीं। इसमें उस परिवार के पुरुषों व अन्य सदस्यों की पूर्वाग्रहिता भी कुछ हद तक जिम्मेदार होती है परन्तु यह भी सत्य है कि इस विघटन के लिए कामकाजी महिला का सामंजस्यवादी पहलू कमज़ोर होना भी उत्तरदायी होता है। घरेलू महिलाओं की प्रतिरोधक क्षमता कामकाजी महिलाओं की तुलना में क्षीण होती है। वे अपने साथ होने वाले अत्याचार के खिलाफ लड़ने में अपेक्षाकृत कमजोर अथवा टालने वाली प्रवृत्ति की होती हैं। इस प्रकार तमाम पहलुओं पर गौर करते हुए तुलना करें कि घरेलू महिलाएं बेहतर हैं अथवा कामकाजी महिलाएं तो किसी स्पष्ट निष्कर्ष पर पहुँचना असंभव प्रतीत होता है, क्योंकि जिस प्रकार हाथ की अंगुलियों में से कौन सी श्रेष्ठ है और कौन सी निकृष्ट है, यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता। उसी प्रकार घरेलू महिलाओं और कामकाजी महिलाओं में श्रेष्ठता का खिताब देना भी दुष्कर कार्य है। इन सभी दोषों तथा विशेषताओं के बावजूद भी इस सृष्टि में महिलाओं का स्थान अत्यन्त सराहनीय, सम्मानीय और अनिवार्य भी है।

आकाश की तरफ देखिये। हम अकेले नहीं हैं। सारा ब्रह्माण्ड हमारे लिए अनुकूल है और जो सपने देखते हैं और मेहनत करते हैं, उन्हें प्रतिफल देने की साजिश करता है।

अब्दुल कलाम

।।कविता सृजन ।।

श्री नित्यानन्द सिंह,
लेखापरीक्षक

एक मित्र के कहने पर, कविता लिखने की ठानी थी।
ये कौन सा काम कठिन है, ऐसी सोच पुरानी थी।।

सोचा आज हम कवि बनेंगे, लिख देंगे सब मन की बात।
घर पहुँचे तो देखा बच्चे, चला रहे थे घूंसे लात।।

पत्नी जी का चेहरा देखा, गुस्से में था पीला लाल।
बोली, तुम्हारी संतानों ने, जीना मेरा किया मुहाल।।

खुद तो ऑफिस में रहते हो, जान ये मेरी खाते हैं।
अब जरा तुम इन्हें संभालो, हम बाजार से आते हैं।।

किस मुँह से अब उनको कहते, हमें कविता लिखनी है।
घर में रहना है तो मित्रों, बात तो उनकी सुननी है।।

आज कवि की कठिनाई को, बहुत खूब पहचाना है।
कवि बनना कोई खेल नहीं है, आज ये हमने जाना है।।

'प्रयास' के प्रयास में जो, कवि बनने की ठानी थी।
आज हमें एहसास हुआ है, वो एक नादानी थी।।

कोई काम शुरू करने से पहलेए स्वयं से तीन प्रश्न कीजिये . मैं ये क्यों कर रहा हूँए इसके परिणाम क्या हो सकते हैं और क्या मैं सफल होऊंगा और जब गहराई से सोचने पर इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर मिल जायेंए तभी आगे बढें।

चाणक्य

उन गुजरे रिव्यू के लम्हों में

श्री मदन सिंह गर्ब्याल,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

क्या देखा मैंने, उन गुजरे रिव्यू के लम्हों में,
देखा, हकीकते बयां की तस्वीर,
ऐसा देखा, जो कभी आज तक न देखा,
आंखो में प्रेम का अहसास दिलाते अपनों को भी देखा,
वक्त आने पर काम बटोरते कुशल हाथों को भी देखा,
उम्दा पलों को गंवाते इन्सान को भी देखा,
वक्त की नजाकत कठिन परीक्षा की घड़ी को भी देखा,
खुद के सब्र का पैमाना भी देखा,
एक बार नहीं, हर बार हम सफर बनने का ईमान भी देखा,
बैजरों की तलहटी व पौड़ी की ऊंचाई को भी देखा,
पहाड़ी गुरूजनों के अतिथि सत्कार का बेमिसाल अन्दाज भी देखा,
जी जान से काम में लगे रहने का मेरे साथियों का जुझारूपन भी देखा,
क्या नहीं देखा, उन गुजरे रिव्यू के लम्हों में।

घुड़दौड़ी की स्वर्ग सी छटा भी देखा,
नये जमाने का कम्प्यूटर शिक्षा का फल भी देखा,
हरिद्वार के ब्रह्मकुण्ड़ में पुण्य कमाने का सुअवसर भी देखा,
पित्रपक्ष व नवरात्र का अद्‌भुत संगम भी देखा,
ब्याह शादी में नव युवक व यौवनाओं का थिरकन भी देखा,
दफ्तर का समय सुबह आठ बजे से रात के बारह बजते भी देखा,
खिरसू सरीखे पर्यटन स्थल भी देखा,
फिल्मी शूटिंग का नजारा भी देखा,
क्या नहीं देखा, उन गुजरे रिव्यू के लम्हों में।

कभी उच्च अधिकारियों को उम्मीदों से पलकें बिछाते देखा,
तो कभी उनके अंदाज़े सख्त रूख को भी देखा,
अंत तक साथ निभाते अपने साथियों के जज्बा को भी देखा,
भगोड़ों की राह खोजती बागी निगाहों को भी देखा,

दुःख हो या सुख हो, करतब हो या जोखिम हो,
मिल बांट कर भार उठाते टीम स्प्रिट भी देखा,
क्या नहीं देखा, उन गुजरे रिव्यू के लम्हों में।
उत्तराखण्ड की सुरम्य वादियों की अद्‌भुत सुन्दरता व उत्तुंग
हिमालय के हिम दर्शन से साथियों के खिले चेहरों को भी देखा,
वहीं, काम के अम्बार में, कभी चिन्ता,
तो कभी तनाव, कभी मस्ती का आलम भी देखा,
प्राइमरी स्कूल के नन्हें–मुन्ने प्यारे बच्चों से लेकर
विश्वविद्यालय तक के कहीं शोख चंचल, तो कभी हुस्ने
लाजवाब, तो कहीं विद्वान सरीखे परिपक्व विद्यार्थियों को भी देखा,
और मेरे तीन जिगरे यार हिम्मत, लगन व ईमानदारी को
सदैव आखिरी दम तक साथ निभाते देखा,
क्या नहीं देखा, उन गुजरे रिव्यू के लम्हों में।

हम लोगों ने अंग्रेजी वस्तुओं का विरोध करने में तब गर्व महसूस किया था जब वे ;अंग्रेजद्ध हम पर शाशन करते थेए पर हैरत की बात हैए अब जब अंग्रेज जा चुके हैंए पश्चिमीकरण प्रगति का पर्याय बन चुका है।

पं दीन दयाल

एक कदम, बचपन की ओर

श्री अरविन्द कुमार उपाध्याय,
लेखापरीक्षक

बचपन के दिनों की याद आज भी रोमांचित कर देती है। एक अनोखा एहसास रोम–रोम को पुलकित कर देता है। वर्तमान समय का जबरदस्त शोर–गुल भी उन दिनों के मीठे संगीत की ध्वनियों को दुर्बल नहीं कर पाता। वे पल आज भी खुशी का एहसास दिलाते हैं। हमारी आज–कल की भाग–दौड़ भरी ज़िंदगी में सुकून के पल बड़ी मुश्किल से मिलते हैं, किन्तु वो भी आने वाले दिन की चिन्ताओं से अपना एहसास दिला पाने से पहले ही कहीं गायब हो जाते हैं। आखिर ऐसा क्यों होता है? क्या यह सबके साथ होता है? इसका जवाब तो मेरे पास नहीं, किन्तु मैने अनुभव किया है कि हमारी मीठी यादें हमारे वर्तमान में निश्चय ही रस घोलती हैं और कड़वी यादें इन पलों की खुशियाँ छीन लेती हैं। यह प्रश्न निश्चय ही विचारणीय है कि क्यों बड़ी–बड़ी उपलब्धियाँ भी हमें वो एहसास नहीं दिला पाती जिन्हें हम जीवन भर सहेजकर रखें और जो उम्रभर अपनी मिठास बिखेरती रहें। हम किसी भी दृष्टिकोण से विचार करें, बचपन की वे बातें अत्यन्त छोटी–छोटी थीं। उन्हें हम अपनी उपलब्धियों में नहीं गिन सकते परन्तु वे इतनी महत्वपूर्ण क्यों हैं। क्या खास है उनमें कि वे आज भी अनवरत प्रेम लुटा रहीं हैं और हमारे वर्तमान की व्याधियों के लिए संजीवनी बनने की क्षमता रखती हैं। हम सभी को याद होगा कि हर एक त्यौहार, हर छोटा–बड़ा मेला, मेले में दंगल, बंदर–बंदरिया का नाच, कठपुतली के तमाशे, प्रातः काल में मंदिर के घंटे, संध्या की आरती, एक–दो रुपये के खिलौने, हमें कितनी खुशियाँ दे जाते थे। एक त्यौहार के बीतते ही आने वाले त्यौहार के बचे दिनों की गिनती शुरू हो जाती थी। इस दौरान मिले सभी पैसों को जोड़कर रखते थे ताकि मेले में उनसे कुछ खरीद सकें। वो उमंग, उत्साह, खुशी और संतुष्टि अद्‌भुत थी। इतनी अद्‌भुत और चमकीली कि गुजरते वक्त की धूल भी उसे धूमिल नहीं कर सकी। प्रायः आज सभी को कहते हुए सुना जा सकता है कि पहले का संगीत, चलचित्र और यहाँ तक कि दूरदर्शन पर दिखाये जाने वाले कार्यक्रम भी आज की तुलना में अधिक गुणवत्तापूर्ण और मनोरंजक होते थे। तब ब्लैक एण्ड ह्वाइट का जमाना था, टी.वी. सिग्नल भी डिजिटल नहीं थे और न ही एच.डी. चैनल्स थे, फिर भी वे चीजें ज्यादा अच्छी लगती थीं। इन सभी का कारण हमारी बदली मनोदशा तो नहीं, शायद हाँ।

हम पहले दिल के अधिक करीब जीते थे। जैसे–जैसे हम विकास की सीढ़ियाँ चढ़ते गये, वैसे–वैसे हम दिल से दूर होते गये और मस्तिष्क के करीब। अपने हर निर्णय में हम अपने मन को अनसुना करते रहे और उसका परिणाम यह हुआ कि हमारा मन व्यथित होता गया

और आज पूर्व के किसी भी समय से अधिक व्यग्र, व्यथित और तनावपूर्ण स्थिति में है। आज हमें बच्चों के साथ खेलना, बड़ों के साथ समय बिताना एवं त्यौहारों में मिलना–जुलना आदि जैसी बातों में आनन्द नहीं मिलता। हमने जीवन यात्रा को एक दौड़ बना दी है जिसमें हमारी महत्वाकांक्षाओं का शासन चलाता है। एक इच्छा पूर्ण हुई, परन्तु उसके आनन्द की अनुभूति किये बिना ही दूसरी इच्छा को पूर्ण करने की दिशा में दौड़ पड़े। हम इच्छाओं के दास बन चुके हैं और भौतिक संसाधनों का अंबार एकत्र करना ही हमारा एक मात्र लक्ष्य रह गया है। हम इतनी तेजी से दौड़ रहे हैं कि अपने पास से गुजर रही वस्तुओं पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पा रहे। हमारी स्थिति ठीक उसी प्रकार है, जैसे अत्यन्त तीव्र गति से चलते हुए वाहन में बैठे किसी यात्री की होती है जो दूर की चीजों की तरफ बढ़ता जाता है परन्तु पास की चीजें वाहन की अत्यधिक गति के कारण स्पष्ट नहीं देख पाता। गन्तव्य की प्रतीक्षा में जीवन के सुखद पड़ावों को भी हम भूल जाते हैं।

यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो पायेगें कि हम तकनीकी रूप से इतने उन्नत कभी न थे। भौतिक सुख–सुविधाओं का इतना विशाल भंडार कभी न था। हमारी गति इतनी अधिक कभी न थी। फिर भी हम अधिक व्यथित, चिंतित और असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। हर तरफ समस्याओं का विकराल रूप देखा जा सकता है। हिंसा, भ्रष्टाचार, और अविश्वास का रूप इससे अधिक विकृत शायद ही कभी रहा होगा। भूतकाल में लिए गये प्रत्येक छोटे–बड़े निर्णय हमारी वर्तमान परिस्थिति के लिए उत्तरदायी होते हैं और अपने जीवनकाल में हम आज तक जो करते आये हैं उसका प्रतिफल ही वर्तमान है। मानव समाज और उसका वातावरण, अब पहले जैसा नहीं रहा। इसका एक मात्र कारण यही है कि व्यक्ति और समाज एक दूसरे को ऊर्जा और दिशा प्रदान करते हैं। यदि व्यक्ति अन्तःकरण में व्यथित है तो समाज में वह उसी रूप में ऊर्जा का प्रसार करेगा और यदि समाज प्रदूषित है तो व्यक्ति में इसी प्रदूषण का संचार होगा।

यदि हम बीते सुनहरे पल अपने जीवन में फिर से देखना चाहते हैं तो इस जीवन यात्रा को नई दिशा और नई ऊर्जा प्रदान करने में तनिक भी देर नहीं करनी चाहिए। पहले ही देर हो चुकी है तथा कष्ट, व्यथा और चिंता के बादल घने रूप ले चुके हैं। इसकी शुरुआत स्वयं से करनी है। अपने भौतिक विकास की लालसा में हम बौद्धिक रूप से निर्धन हो चुके हैं। आज सफल, खुश, चिंतामुक्त और शक्तिशाली होने का एक मात्र रास्ता भौतिक संसाधनों को एकत्रित करने तक सीमित हो गया है। हमें यह जानना होगा कि वास्तव में इस कलह और दुःख का कारण हमारी यह प्रवृत्ति ही है। हम क्यों ऐसा सोचते हैं कि इतना धन एकत्र कर लें कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ आराम और सुख की जिंदगी व्यतीत करें। इसी प्रवृत्ति के कारण धन एकत्र करने और उसके लिए शोषण, हिंसा, भ्रष्टाचार आदि रास्तों पर चलने के लिए हम बाध्य हुये हैं। हमें इस प्रवृत्ति का त्याग कर एक ऐसा समाज और वातावरण निर्मित करने की दिशा में बढ़ने की आवश्यकता है जहाँ ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' की व्यवस्था स्थापित हो

सके। यदि हम स्वयं और अपनी अगली पीढ़ी को बौद्धिक रूप से इतना विकसित कर दें कि सर्वसंग्रह करने की इस प्रवृत्ति का त्याग किया जा सके तो समाज और संसार में व्याप्त सारी समस्याओं का आसानी से समाधान किया जा सकता है। हम बीमारी को समूल नष्ट करने के बजाय उसके विभिन्न लक्षणों का अलग–अलग इलाज करने में लगे हैं। यदि हमें वास्तव में मानव ह्रदय की प्रसन्नता, कोमलता और अहिंसात्मक प्रवृति को पुनः स्थापित करना है तो यह आवश्यक है कि हम आज ही पहला कदम उठाने का संकल्प लें और इसके लिए समाज का प्रत्येक वर्ग एक जुट होकर प्रयास करे।

यदि हम निःस्वार्थ भाव से इस दिशा में आने वाले कुछ वर्षों तक बढ़ते रहे तो बचपन के वो पल हमारे जीवन में फिर से प्रेम रस की बारिश करेंगे, वे यादें फिर से ताजी होंगी, हम सबके अन्दर का बचपन फिर से जागृत होगा, और इस भागदौड़ एवं चिंता भरी जिंदगी से निजात मिलेगी। सुकून के पल फिर से लौटेंगे और आज का भीषण शोरगुल फिर से मधुर ध्वनियों से परास्त होगा। इस धरती पर व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण, हिंसा, अराजकता एवं स्वार्थी जीवन का नाश होगा। परोपकार, त्याग एवं अहिंसा के मूल्यों की पुनः स्थापना होगी। कागज की नाव फिर से चलेगी और प्रकृति का वात्सल्य सुख उसकी संतानों को फिर से प्राप्त होगा।

हम जो बोते हैं वो काटते हैं हम स्वयं अपने भाग्य के विधाता हैं हवा बह रही हैं वो जहाज जिनके पाल खुले हैं इससे टकराते हैं और अपनी दिशा में आगे बढ़ते हैं पर जिनके पंख बंधे हैं हवा को नहीं पकड़ पाते क्या यह हवा की गलती हैं हम खुद अपना भाग्य बनाते हैं।

स्वामी विवेकानंद

॥ प्रकृति का महत्व ॥

श्री नित्यानन्द सिंह,
लेखापरीक्षक

बीत गया है साल, आपदा हुई नहीं पुरानी है।
बच्चों, बूढ़ों की आंखों में, अब भी वो रात तूफानी है।।

जब ईश्वर हुए नाराज, तब खूब कहर बरपाया था।
जैसा कर्म किया लोगों ने, वैसा ही फल पाया था।।

प्रकृति को काट काटकर, सीना छलनी कर डाला।
पशु, पक्षियों और इंसान को, इंसान ने बेघर कर डाला।।

नहीं अगर सुधरे अब भी तो, विपदा फिर से आनी है।
बीत गया है साल, आपदा हुई नहीं पुरानी है।।

बच्चों, बूढ़ों की आंखों में, अब भी वो रात तूफानी है।।

दोष किसका था पहले, अब हमें नहीं गिनवाना है।
करके प्रकृति की रक्षा, अपना भविष्य बचाना है।।

मेरी मानो आओ मित्रों, करें आज एक अच्छा काम।
रखना होगा मिलजुल करके, इस धरती का सबको ध्यान।।

दूर नहीं वो दिन जब, गंगा, जमुना बन जानी एक कहानी है।
बीत गया है साल, आपदा हुई नहीं पुरानी है।

बच्चों, बूढ़ों की आँखों में, अब भी वो रात तूफानी है।।

आँख के बदले में आँख पूरे विश्व को अँधा बना देगी.

महात्मा गाँधी

बेटी पिता से

सुश्री हेमलता गुप्ता,
लेखापरीक्षक

मुझे इतना प्यार न दो पापा,
कल जाने ये नसीब हो न हो,
ये जो माथा चूमा करते हो,
कल इस पर शिकन अजीब न हो।

मैं जब भी रोती हूँ पापा,
तुम आँसू पोछा करते हो,
मुझे इतनी दूर न छोड़ आना,
मैं रोऊँ तो तुम्हें खबर भी न हो।

मेरे नाज़ उठाते हो पापा,
मुझे लाड़ लड़ाते हो पापा,
मेरी छोटी–छोटी ख़्वाहिश पर,
तुम जान लुटाते हो पापा।

कल ऐसा ना हो एक नगरी में,
मैं तन्हा तुमको याद करूँ,
और रो–रोकर फरियाद करूँ,

हे भगवान! मेरे पापा जैसा,
कोई प्यार जताने वाला हो,
मेरी हर ख़्वाहिश पूरी कर,
मेरे नाज़ उठाने वाला हो।

पिता पुत्री से–
जो सोच रही हो तुम बेटी,
वो सब तो इक माया है,
कोई बाप अपनी बेटी को,
कब जाने से रोक पाया है।

सच कहते हैं दुनिया वाले,
बेटी तो धन पराया है,
घर–घर की यही कहानी है,
दुनिया की रीत पुरानी है।
हर बाप निभाता आया है,
तेरे पापा को भी निभानी है।

नाम में क्या रखा है ? अगर हम गुलाब को कुछ और कहें तो भी उसकी सुगंध उतनी ही मधुर होगी।

विलियम शेक्सपीयर

शबाबे दून

श्री मदन सिंह गर्ब्याल,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

ए मस्त देहरादून, अलमस्त है तू,
चारों ओर पहाड़ियों से घिरा मदहोश सेज है तू,
मौसमें अटखेलियाँ सदा बहार है तू,
प्रकृति की शबाबे जवानी है तू,
तभी तो पहाड़ों की रानी की सगी बहिन कहलाती है तू,
ए मस्त देहरादून, अलमस्त है तू।

सदियों से बच्चे–बूढ़े व जवानों की आकर्षण का केन्द्र रही है तू,
हर उम्र के शख्स की मधुशाला है तू,
देशी–विदेशी हर सैलानी की चाहत है तू,
तभी तो रौनके पलटन बाजार की सृष्ठा कहलाती है तू,
ए मस्त देहरादून, अलमस्त है तू।
भारत के जनरलों की पहली पसन्द रही है तू,
धन–कुबेर पतियों की आरामगाह है तू,
फिल्मी हस्तियों की कर्मस्थली है तू,
तभी तो परियों की मधुबन कहलाती है तू,
ए मस्त देहरादून, अलमस्त है तू।
राजा–महाराजाओं की थाती रही है तू,

गोरखा, टिहरी राजा और ब्रितानी हुकुमरानों की मज़मून रही है तू,
आई.एम.ए. के वीर सैनिकों को अपनी माटी में पुख्ता बनाती है तू,
तभी तो भारत के रणबांकुरो की जननी कहलाती है तू,
ए मस्त देहरादून, अलमस्त है तू।
महाभारत की ऐतिहासिक गाथा है तू,

ऋषि–मुनियों–तपस्वियों की तपस्थली रही है तू,
गुरू द्रोणाचार्य की तपोभूमि रही है तू,
तभी तो द्रोणनगरी, देहरादून कहलाती है तू,
ए मस्त देहरादून, अलमस्त है तू।

एक वाला नहीं, एक सौ एक वाला की माँ है तू,
देव भूमि उत्तराखण्ड की हृदय स्थली है तू,
उत्तराखण्डियों की क्रान्ति व संघर्ष का फलसफा है तू,
तभी तो भारत की नई सौगात, उत्तराखण्ड की राजधानी कहलाती है तू,
ए मस्त देहरादून, अलमस्त है तू।

सफ़र

श्री सतेन्द्र कुमार,
लेखापरीक्षक

अभी तो नाम कमाया है, अब खुद ही नाम बनाना है,
सफ़र अभी बस शुरू हुआ है, बहुत दूर तक जाना है।

दूर कहीं उस पार भँवर के मुझको दिखती हैं राहें,
विजयश्री ने फैला रखी हैं मेरी ही खातिर बाहें,
अंधियारे को चीर रोशनी दिखती जो इक बार मुझे,
फिर अपनी हिम्मत के आगे छोटा लगता है संसार मुझे,
आसमान की छत के ऊपर अपने सपनों को सजाना है। अभी तो......

इस पथ पर चलना है अकेले, ये भाग्य पुरातन है मेरा,
तूफानों से पतवार के जैसा, संघर्ष सनातन है मेरा,
मुझे पता है इन राहों पर, चलना इतना आसान नहीं,
जीतता हूँ और जीतूंगा, पर इसका कुछ अभिमान नहीं,
जिसका सब सपना ही देखें, उस मंजिल को पाना है। अभी तो........

राष्ट्र भाषा

श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मुझे चाहत नहीं कि जग मुझे चाहे।
मुझे चाहत नहीं कि पर्वत से ऊंची हो मेरी राहें।।

मुझे चाहत नहीं कि सारा जग मुझे सराहे।
मुझे चाहत नहीं कि विश्व की भाषाओं में मेरा नाम हो।।
मुझे चाहत नहीं कि विश्व इतिहास में मेरा नाम हो।

पर अपने ही देश में ऐसा अनादर सह नहीं पाती हूँ।
पर मजबूर हूँ कुछ कह नहीं पाती हूँ।

कितना दुखद है कि राष्ट्रभाषा होते हुए भी मेरी पहचान नहीं है।।
अपने बच्चों को ही मेरा ज्ञान नहीं है।।

हर साल मेरी याद में हिन्दी दिवस मनाना पड़ता है।
मैं राष्ट्रभाषा हूँ इसे देश को बताना पड़ता है।।

हर बार मुझे लगता है अब सब जाग जाएंगे।
बिना कोई दिवस मनाये ही मुझे अपनायेँगे।।

पर एक पखवाड़े बाद ही सब मुझे भूल जाते हैं।
मेरे अरमान मेरे आँसुओं में धुल जाते हैं।

क्या अपने देश में इतना सम्मान नहीं पा सकती मैं।
क्या वास्तव में इस देश की राष्ट्रभाषा नहीं कहला सकती मैं।
कब तक इस देश में तिरस्कार सहूँगी मैं।

मेरे नाम पर पखवाड़ा मनाकर मत उपकार करो।।
अगर वास्तव में राष्ट्रभाषा हूँ तो मुझे दिल से स्वीकार करो।।

लोकतंत्र

सुश्री रेखा,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

लोकतंत्र शब्द सुनते ही हमारे मस्तिष्क में इससे संबंधित ढेरों विचार पैदा होने लगते हैं। जैसे– क्या है लोकतंत्र, कैसे इसका विकास हुआ, और वर्तमान में इसका स्वरूप कैसा है. लोकतंत्र का अर्थ जनता का तंत्र अर्थात जनता द्वारा बनाया गया ऐसा तंत्र, ऐसी व्यवस्था जो जनता के जीवन की समूची आवश्यकताओं को पूरा करने का कार्य करे। इस व्यवस्था में जनता को किसी भी प्रकार का अन्याय न सहना पड़े। जनता की विविधताओं को सम्पूर्ण रूप से स्वीकार करे तथा उनके बीच सामंजस्य स्थापित करते हुये इसकी आकांक्षाओं को पूरा करने में भरपूर सहयोग करे, विकास की रफ्तार भले ही धीमी हो परन्तु स्थायी होनी चाहिए, बिना बाधित हुए सतत होनी चाहिए। जनता का सर्वांगीण विकास करे। समावेशी विकास करे, लोकतंत्र में लोक विशेष होना चाहिए, आधार लोक होना चाहिए तथा केन्द्रबिन्दु भी लोक ही होना चाहिए, मानव में देवता भी निवास करते हैं, और दानव भी, इसकी आकांक्षाएं भी बड़ी विचित्र एवं व्यापक होती हैं, इसलिए हमें लोकतंत्र का निर्माण करते समय लोक के रूप, प्रकृति तथा स्थिति का भी ध्यान रखना है, जिससे किसी भी स्थिति में किसी अन्य के साथ अन्याय न होने पाए। इस अन्याय से बचने के लिए अगर हमें लोकतंत्र में कड़े फैसले भी लेने पड़े तो संकोच नहीं करना चाहिए। हमें क्षणिक हानि के बजाय दूरगामी लाभों तथा स्थायी तंत्र के विषय में सोचना चाहिए। लोकतंत्र का अस्तित्व तभी बरकरार रह सकता है जब लोक का सर्वांगीण विकास हो, लोकतंत्र में व्यवस्था इस प्रकार की होनी चाहिए कि समय के साथ आने वाले परिवर्तनों को भी इसमें समाहित किया जा सके। लोकतंत्र की शुरुआत परिवार से शुरू करके गली–मोहल्लों, गांवों, ब्लाकों, शहरों, राज्यों, देश तथा समूचे विश्व तक फैलाने की आवश्यकता है। इस व्यवस्था में समय अवश्य लगेगा परन्तु यह असंभव नहीं है। इस व्यवस्था को इस प्रकार लागू किया जाना चाहिए, जिससे कि यह थोपी हुई प्रतीत न हो, बल्कि उन्हें यह अपने जीवन का अनिवार्य अंग प्रतीत हो। जिस प्रकार एक परिवार का मुखिया अपने परिवार की सेवा एवं सुरक्षा स्वयं के जीवन से बढ़कर तथा अपनी क्षमताओं से बढ़कर करने को तत्पर रहता है, उसी प्रकार राज प्रमुख के अंदर भी यही भावना होनी चाहिए। जिस प्रकार परिवार के सभी सदस्य अपने मुखिया के प्रति जवाबदेह रहते हैं व परिवार के सदस्य प्रमुख की गरिमा एवं प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं उसी प्रकार की भावना लोक में होनी चाहिए। अगर हमें

लोकतंत्र के सच्चे स्वरूप को देखना है तो व्यवस्था एक परिवार के समान होनी चाहिए जहाँ परिवार के सदस्यों पर ज़ोर–जबरदस्ती के बिना, किसी कानून या नियम के बिना वे अपने कर्तव्यों का निर्वाह स्वेच्छा से तथा अपना नैतिक दायित्व मानते हुये करते हैं। बचपन से ही उन्हें यह बातें सिखायी जाती हैं माता–पिता या अपनों के द्वारा। यही कार्य हमें देश हित में करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी अपनी संस्कृति को समझ सकें व सहेज सकें।

लोकतंत्र संसार में आज तक उपलब्ध सभी तंत्रों से सर्वोच्च है। इस तंत्र में जनता बिना दूसरों को कष्ट पहुंचाए स्वयं का विकास कर सकती है। यूँ तो लोकतंत्र का बखान करते हुये हम अनंत पृष्ठों का लेख अथवा पुस्तक लिख सकते हैं परन्तु, यदि हम लोकतंत्र के बखान में एक ऐसा वाक्य लिखना चाहें जो गागर में सागर भर दे तो इसके लिए इससे अच्छा वाक्य नहीं हो सकता कि "जिस प्रकार मनुष्य के शरीर का सबसे खूबसूरत, स्थायी, अमर अंग उसकी आत्मा होती है, उसी प्रकार समस्त प्रकार की शासन व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था तथा अन्य किसी भी प्रकार की व्यवस्था में लोकतंत्र व्यवस्था होती है"।

वह जो हमारे चिंतन में रहता है वह करीब हैए भले ही वास्तविकता में वह बहुत दूर ही क्यों ना हो लेकिन जो हमारे ह्रदय में नहीं है वो करीब होते हुए भी बहुत दूर होता है।

चाणक्य

रहिमन पानी राखिये

श्री अशोक कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पिछले महीने की बात है, सुबह उठकर देखा तो नल में डायरेक्ट कनेक्शन वाला पानी नहीं आ रहा था। खैर, छत की टंकी में पानी था। उसी से काम चला। मेहमान भी आये हुए थे। सभी के नहाने–धोने में पानी आखिर कब तक बचा रहता। वो भी दोपहर तक समाप्त हो गया। अब समस्या की गंभीरता का पता चला। हम समझ रहे थे कि पानी की सप्लाई किसी कारणवश रोकी गयी और कुछ देर में सामान्य हो जायेगी। लेकिन ये तो गंभीर समस्या बनने जा रही थी। जब काफी देर तक पानी नहीं आया तो मैं पानी सप्लाई करने वालों के पास गया तो पता चला कि भूमिगत जल का स्तर नीचे चले जाने के कारण पम्प पानी नहीं खींच पा रहा है। अब एक ही उपाय था कि ट्यूबवेल में और नल जोड़े जायें जिससे जलस्तर तक उनकी पहुंच हो सके और पम्प पानी खींच सके। लेकिन इस कार्य में बहुत समय लगना था। इसलिए पानी सप्लाई करने वाले टैंकर मंगवाये गये। मैंने और मेरे मेहमानों ने भी टैंकर से भरकर बाल्टियां ढ़ोयी, तब जाकर रात का खाना बन सका। आस–पड़ोस में सभी लोगों का भी यही हाल था। सब ओर पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ था। लोग अपने स्टोर से पुराने बर्तन–भांडे निकाल रहे थे और सपरिवार पानी ढो रहे थे। गर्मियों के दिन और यह भीषण जल संकट! अगले दिन तक जाकर स्थिति सुधर सकी और जीवन अपने सामान्य ढंग से चलने लगा।

बिन पानी सब सून।

भोजन के बिना हम कुछ दिन जीवित रह सकते हैं पर जल के बिना एक–दो दिन से ज्यादा जीवित रहना संभव नहीं है। जब एक दिन पानी की सप्लाई में आया व्यवधान हमारे जीवन में इतनी उथल–पुथल मचा सकता है तो सोचिये उन लोगों का क्या हाल होगा जो यह समस्या प्रतिदिन झेलते हैं। विश्व में करोड़ों लोगों के पास पीने के पानी का घोर अभाव है। नहाना–ध ोना दूर की बात है, उन लोगों के लिए स्वच्छ पेयजल एक सुखद स्वप्न के समान है। अन्य स्थानों में लोग ऐसे लोगों की समस्या से अनभिज्ञ होकर 'पानी की तरह' पानी बहा रहे हैं। कई लोग सोचते हैं कि पानी एक कभी न समाप्त होने वाला संसाधन है। ऐसे लोग अपनी कार पेयजल से धोते हैं। उनके घरों में बाथटब हैं, स्विमिंग पूल है, और बगीचों में पानी के फव्वारे

चल रहे हैं। सार्वजनिक स्थानों में नलों में लीकेज है या उनमें टोंटियां नहीं हैं। जबकि विश्व में करोड़ों लोगों के लिए मात्र स्वच्छ पेयजल प्राप्त करना ही एक 'लक्जरी' है। राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों में महिलाओं को मीलों दूर से पानी लाना पड़ता है। वहीं उत्तराखण्ड में भी कई गावों में, मीलों दूर की चढ़ाई चढ़कर, परिवार के लिए स्त्रियां सिर पर ढोकर पेयजल लाती हैं। मैने स्वयं दिल्ली जैसे महानगरों में लोगों को घंटो कतारबद्ध होकर पानी के टैंकर के इंतजार में खड़ा देखा है। ऐसे स्थानों में पानी के लिए झगड़े होना सामान्य बात है। कई बार सिर फुट्टवल्ल हो जाता है। कभी–कभार तो पानी के लिए हत्याऐं भी हो जाती हैं। हमारे देश में ही तमिलनाडु–केरल–कर्नाटक, दिल्ली–हरियाणा राज्यों के बीच जल को लेकर विवाद चलता ही रहता है वहीं भारत का पाकिस्तान एवं बांग्लादेश के साथ जलविवाद चल रहा है।

आखिर क्या कारण है कि हमारी धरती के दो–तिहाई से भी अधिक भाग के जल से ढके होने के बावजूद भी ऐसी गंभीर जल संकट की स्थिति है? वास्तव में धरती का अधिकांश भाग चारों ओर महासागरों से घिरा है। लेकिन महासागरों का अत्यन्त खारा पानी पिया नहीं जा सकता है। उसे पीने से कुछ ही देर में मृत्यु हो जायेगी। इसीलिए कहते हैं कि सागर में भी लोग प्यासे मर जाते हैं। मीठे पानी के स्रोत सीमित हैं। इनमें नदियां, झीलें, तालाब एवं भूमिगत जल के स्रोत प्रमुख हैं। नदियों, झीलों, तालाबों आदि को मनुष्य द्वारा इस स्तर तक प्रदूषित कर दिया गया है कि नदियां गंदे नालों में परिवर्तित हो गयी हैं। तालाब और झीलें कचरे एवं मल–मूत्र के ढेरों से भर चुके हैं। हमारे देश में उपयोग हेतु भूमिगत जल को ही अधिकांशतः प्रयोग में लाया जाता है परन्तु अत्यधिक दोहन के फलस्वरूप भूमिगत जल का स्तर लगातार नीचे गिरता जा रहा है। लोग और अधिक शक्तिशाली मोटर का प्रयोग कर गिरते भू–जल स्तर को और रसातल में पहुंचा रहे हैं। भूमिगत जल भी प्रदूषण से मुक्त नहीं है। सीवरों एवं सेप्टिक टैंको से रिसाव हुआ दूषित जल, खतरनाक औद्योगिक कचरे को जमीन में गाड़ने तथा किसानों द्वारा कीटनाशकों एवं उर्वरकों के अंधाधुंध इस्तेमाल ने भूजल को कई स्थानों पर अनुपयोगी बना दिया है। हमारे घरों में उपयोग होने वाले साबुन और डिटर्जेंट भी आखिरकार नदियों में जाकर जल प्रदूषण ही बढ़ाते हैं। लेकिन क्या जल प्रदूषण ही एकमात्र समस्या है?

पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।

महाकवि रहीम का एक दोहा था–रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून। अर्थात पानी के बिना मोती, मनुष्य एवं चून (आटा) का कोई मोल नहीं है। यहां पानी के तीन अर्थ है। पानी यानी जल, पानी अर्थात स्वाति नक्षत्र की बूंद एवं मानव के लिए उच्च भाव। वर्तमान में सबसे बड़ा संकट तो यही है कि मनुष्य का 'पानी' समाप्त

हो गया है। पानी अर्थात शर्म, मर्यादा, मान–सम्मान, नैतिकता जैसे उच्च भाव। प्राचीनकाल में इस देश में जल को पवित्र मानकर नदियों की उपासना की जाती थी। जल स्रोतों को गन्दा करना महापाप समझा जाता था। पानी पिलाना पुण्य का काम होता था। लोग प्याऊ बनवाते थे, कुएं एवं तालाबों का निर्माण करवाते थे। गर्मियों में घड़ों में पानी भरकर लोग चौराहों पर रखवाते थे। आज ये स्थिति है कि पानी बोतलों में बंद होकर बिक रहा है। शहरों में ठेलों में एक या दो रुपये में एक गिलास पानी मिलता है। कई सरकारों ने कॉरपोरेट सेक्टर को जल दोहन का अधिकार बेच दिया हैं, जिनके लिए पानी एक मुनाफा कमाने का साधन बन गया है। कल–कारखाने जहरीले रसायनों से युक्त जल को बिना उपचारित किये सीधे नदियों या किसी नाले में बहा दे रहे हैं जो कि पेयजल के साथ–साथ सागरों को भी प्रदूषित कर रहा है। शहरों का सीवेज भी बिना उपचार के नदियों में छोड़ दिया जाता है। अत्यधिक बढ़ती जनसंख्या लगातार प्राकृतिक संसाधनों पर लगातार दबाव बना रही है। 'सुरसा के मुंह की तरह' बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिए बचे–खुचे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यन्त तीव्र गति से दोहन किया जा रहा है। जल संसाधन भी उनमें से एक है। शहरों और गाँवों में खाली जगह नहीं रह गयी है। हर जगह भवनों एवं सड़कों से ढकी जा रही है। जिससे वर्षाजल को भूमि के भीतर जाने का अवसर नहीं मिल पाता है। इस कारण जहां एक ओर भूगर्भ जलस्तर लगातार नीचे गिरता जा रहा है वहीं वर्षा का जल जमीन में न जाकर सीधे नदियों में मिलकर उनको विनाशकारी बाढ़ की शक्ति दे रहा है। गावों में तालाब वर्षाजल को संग्रह करने का एक बहुत ही कारगर साधन थे। उनका उपयोग सूखे मौसम में पशुपक्षी एवं मनुष्य भी करते थे। वे भूमिगत जलस्रोत को रिचार्ज भी करते थे। परन्तु लोगों की लापरवाही ने उन्हें या तो सार्वजनिक कूड़ादान बना दिया है या तो भूमाफिया ने उन पर अवैध कब्जा कर उन्हें पाटकर बेच दिया है। परिणामस्वरूप ग्राम्य जीवन भी शहरी जीवन की तरह जल के लिए तरस रहा है।

पेड़–पौधे न केवल वर्षा कराने में ही सहायक होते हैं वरन वे वर्षा जल को धीरे–धीरे धरती पर गिरने देते हैं जिससे भूजल स्तर बढ़ता है और नदियों में जल की मात्रा नियंत्रित होने से बाढ़ से भी बचा जाता है। भवन एवं रहने के लिए मकानों की निरंतर आवश्यकता ने वृक्षों को काटकर शहर बसाने के लिए बेदर्दी से जंगलों को उजाड़ दिया है। इसने जहां मानव एवं पशुओं के बीच संघर्ष को जन्म दिया है वहीं वर्षा कराने एवं अतिवृष्टि से भूपर्पटी को बचाने के कार्य करने वाले वृक्षों का विनाश होने से प्राकृतिक प्रकोपों को न्योता मिल रहा है। मानव जाति अत्यधिक लालच के कारण धरती का विनाश करने के लिए आतुर दिखती है। सभी जितना हो सके प्रकृति को लूटने में लगे हैं। लेकिन इसका परिणाम स्वयं का विनाश ही है। धरती पर समस्त जीव–जन्तु, प्राणी एवं वृक्ष आदि सभी एक दूसरे पर आश्रित हैं। जीवों की

किसी भी एक जाति के विनाश का धरती के पारस्थितिक तंत्र पर विनाशकारी असर होता है। हमें ये याद रखना चाहिए कि बिना मानव जाति के भी इस धरती पर जीवन फल–फूल सकता है परन्तु अन्य जीवों के बिना मानव का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। जिस डाल पर बैठे हैं उसी को काटना कहां की बुद्धिमानी है?

अधिकांश लोग प्रकृति के बारे में चिंता करते हैं परन्तु वे यह नहीं जानते हैं कि प्रकृति का, इस धरती के पारिस्थितिक तंत्र का संरक्षण कैसे करें। नैतिकता, न्यायसंगतता एवं बुद्धि मत्ता से इस समस्या का समाधान हो सकता है। वास्तव में अगर सभी लोग ठान लें तो जीवन सभी के लिए एक सौगात बन सकता है। इसके लिए बस कुछ छोटे कदम उठाना ही पर्याप्त है। हम सभी यह ठान लें कि नदियों, तालाबों एवं अन्य जलस्रोतों को गन्दा न करें। जितना आवश्यक हो उतना ही जल इस्तेमाल करें। वहां कपड़े न धोयें, पालतु पशुओं को ऐसे स्थानों में न नहलाएं और धर्म के नाम पर नदियों में गन्दगी बहाने का अधर्म न करें। गांवों में तालाबों आदि को स्वच्छ रखें। जल बरबाद न करें। सरकारी तंत्र को चाहिए कि वे प्राकृतिक स्रोतों के विनाश करने वाले माफियातंत्र को सख्त कदम उठाकर नियंत्रित करें। घरों में जल के प्रबंधन की कुशल व्यवस्था हो जिससे कि लोगों को साफ पेयजल मिल सके और घरों में आर–ओ सिस्टम लगाने की आवश्यकता ही न पड़े क्योंकि आर–ओ सिस्टम में जल की बहुत अधिक बरबादी होती है। जल संरक्षण हेतु वर्षाजल का संरक्षण करने की योजनाओं को लगातार बढ़ाया जाए। नदियों को जोड़ने की योजना भी इस दिशा में अच्छा कदम हो सकता है। शहरों के लिए यह योजना बनाई जा सकती है कि हर घर और भवनों के आसपास खाली जगह हो जो कि वर्षाजल को भूगर्भ में पंहुचा सके। जल वितरण के कार्य को किसी कॉरपोरेट घराने आदि को सौंपने का जनता को घोर विरोध करना चाहिए। जो प्राकृतिक साधन है उस पर किसी भी एक व्यक्ति या संगठन का नियंत्रण घोर अन्याय है। जल प्रबंधन के लिए सरकारों को समग्र नीति बनानी चाहिए ताकि जल सभी को सुलभ हो सके।

वर्तमान में जिस तरह विश्व में जनसंख्या वृद्धि हुई है उसके फलस्वरूप हर जगह जल को लेकर त्राहिमाम मचा हुआ है। आश्चर्य नहीं है कि अगला विश्वयुद्ध पानी के लिए लड़ा जाए। पानी ऐसी वस्तु है जिसकी कीमत का अन्दाजा तभी होता है जब वह उपलब्ध नहीं हो पाता है। इसीलिए महाकवि रहीम ने कहा था–रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।

देहरादून अवश्य आना

श्रीमती सन्जू रानी,
(एम.टी.एस.)

द्रोणाचार्य का था शिक्षण स्थल,
यह द्रोण नगरी भी कहलाता है।
रामदास ने यहाँ डेरा डाला,
देहरादून ही सबको भाता है।

मसूरी इसके बिल्कुल पास है,
ऋषिकेश भी है, एकदम सटा हुआ।
हरिद्वार भी कोई दूर नहीं है,
पोंटा साहिब भी नहीं है, हटा हुआ।

स्नान का अगर लेना हो आनंद,
सपरिवार यहाँ तुम आना।
गन्धक युक्त पानी की अपार महिमा है,
सहस्त्रधारा में अवश्य नहाना।

भगवान शंकर के स्थल में आकर,
टपकेश्वर महादेव के दर्शन हो।
कुछ क्षण बैठ प्रभु का ध्यान करो।
प्रसन्न मन से कुछ चिन्तन हो।

मसूरी जाने से पहले,
शिव मंदिर अवश्य जाना।
देवालय में कुछ भी चढ़ाना मना है,
केवल महादेव के है दर्शन पाना।

देहरादून घाटी में आने वालों,
तुम हरिद्वार अवश्य जाना।
ऋषिकेश नगरी के दर्शन कर,
जीवन में पुण्य का फल है पाना।

उत्तराखंड की देवभूमि में,
प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद हो पाना।
सैलानियों तुम्हारा हार्दिक स्वागत है,
तुम देहरादून अवश्य आना।

मन में धीरज रखने से सब कुछ होता है। अगर कोई माली किसी पेड़ को सौ घड़े पानी से सींचने लगे तब भी फल तो ऋतु आने पर ही लगेगा।

कबीर

अनमोल रिश्ता

श्रीमती नीरा अग्रवाल पत्नी श्री संदीप गर्ग,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक रिश्ता प्यारा, पवित्र और अनमोल।
हर वस्तु की कीमत है, पर इसका न कोई मोल।।

यह रिश्ता है, भाई बहन का बन्धन अटूट।
चाहे सारे रिश्ते टूटें, यह डोरी मज़बूत।।

कभी लड़ाई, कभी रूठना, कभी प्यार मनुहार।
पायल छनकाती गुड़िया बहना, भइया बरसाये प्यार।।

बचपन बीता आयी जवानी, बहना है तैयार।
भइया की आँखें छलकी, अब आयेगा एक राजकुमार।।

बहना बैठेगी डोली में, दूर कहीं चली जायेगी।
खाते–पीते, उठते–बैठते, याद बहुत वो आयेगी।।

अब कौन रूठेगा मुझसे, किसे मैं मनाऊँगा।
दूर हो गई मेरी बहना, मैं कैसे जी पाऊँगा।।

भइया तुम भी करो ये वादा, मुझे भूल न जाओगे।
हर राखी पर आकर भइया, अपना वचन निभाओगे।।

भाई–बहन बैठकर बोल रहे ये बोल।
एक रिश्ता प्यारा, पवित्र और अनमोल।

घृणा घृणा से नहीं प्रेम से ख़तम होती हैए यह शाश्वत सत्य है।
भगवानगौतम बुद्ध

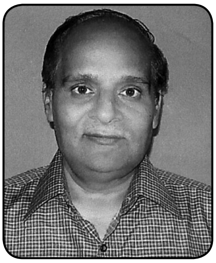

गहराता जल संकट – एक चिंतने

श्री सी०एस० त्रिपाठी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संयुक्त राष्ट्र द्वारा 22 मार्च का दिन विश्व जल दिवस के रूप में घोषित किया गया है जिसका अभिप्राय विश्व समुदाय द्वारा उपलब्ध जल संसाधनों को संरक्षित रखते हुए उनका वैज्ञानिक जल प्रबंधन करके मितव्ययी उपभोग करना तथा इनके उद्भव स्थलों के प्राकृतिक स्वरूप को बनाये रखना है। दुख की बात है कि मनुष्य, जल स्रोत की अक्षुण्णता का वैज्ञानिक उपाय सुनिश्चित किये बिना विकास के नाम पर योजनायें बनाकर, उनके विनाश एवं अवैज्ञानिक विदोहन में लग गया है। वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है तथा उसके सापेक्ष पौधारोपण एवं उनकी सुरक्षा का कार्य नगण्य है। फलस्वरूप बढ़ते मानव दबाव एवं प्राकृतिक संसाधनों के अवैज्ञानिक दोहन होने से जल प्रदूषण एवं प्राकृतिक विपदाओं में उत्तरोतर वृद्धि होती जा रही है।

जल संकट अब किसी मौसम विशेष से जुड़ी बात नहीं रह गई है। बढ़ते प्रदूषण के कारण गुणवत्ता पूर्ण जल का स्तर गिरता जा रहा है तथा इसके स्तर को उठाने के प्रयास विफल हुए हैं। आज औद्योगिक विकास का दुष्परिणाम यह है कि देश की सारी नदियां प्रदूषित हो चुकी हैं। वर्षा कम होने लगी है। जलाशय सूखे रह जाते हैं। जल स्रोतों से पानी का निकलना बंद हो चुका है। विश्व भर में जल का अभाव बड़े पैमाने पर होने वाला है। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी विश्व जल विकास रिपोर्ट में कहा गया है कि विश्व के कई हिस्सों में जल संकट की गंभीर समस्या है। जनसंख्या का दबाव, कृषि की बढ़ती आवश्यकता, अन्न की उपज, ऊर्जा की खपत, प्रदूषण एवं वैज्ञानिक रूप से जल प्रबंधन की कमी के कारण गुणवत्ता युक्त जल की उपलब्धता में निरन्तर ह्रास हो रहा है। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत में विश्व के मात्र चार प्रतिशत जल स्रोत हैं जबकि जनसंख्या विश्व की कुल आबादी का 17 प्रतिशत है। देश के दो तिहाई भू–जल भण्डार रिक्त हो चुके हैं। नदियों का जल, प्रदूषण के कारण उपयोग करने योग्य नहीं है। देश की लगभग आधी आबादी की निर्भरता एवं उत्तर भारत की जीवन रेखा कही जाने वाली गंगा नदी का अस्तित्व भी खतरे में है। विश्व रिपोर्ट के अनुसार गंगा का बायलॉजिकल ऑक्सीजन (BOD) स्तर 3 डिग्री समान्य से बढ़कर हरिद्वार तक 6 डिग्री तथा इससे आगे और अधिक हो गया है क्योंकि इसमें लगभग 290 लाख लीटर प्रदूषित कचरा प्रतिदिन गिरता है।

देश में गहराते जल संकट के परिदृश्य में जल का व्यवसाय करने वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी अहम भूमिका निभाती हैं। ये कम्पनियाँ एक ओर हमारे भूजल का अंधाधुंध दोहन करने में जुटी हैं दूसरी ओर हमारे उत्तरदायी संस्थानों की निष्क्रियता का लाभ उठाकर प्रदूषित जल भूमि के अंदर प्रभावित करती हैं। अनेक रसायनों से मिश्रित इस जल का प्रभाव स्थानीय निवासियों के जीवन, भूमि एवं स्वच्छ जल पर पड़ता है। जल को बचाने एवं उसके संरक्षण हेतु सरकार की ओर से अनेक प्रयास हुए हैं। कई योजनायें बनाई गयी हैं लेकिन यह सारे सरकारी प्रयास बेअसर सिद्ध हुए हैं। सरकार के साथ विडम्बना है कि एक ओर वह जल संरक्षण की योजनायें लागू करती है, वहीं दूसरी तरफ विकास के नाम पर लूट की छूट भी देती है। 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन द्वारा भू–जल पर पंचायतों एवं स्थानीय निकायों को अधिकार दिया गया है तो वहीं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को भू–जल दोहन की बिना किसी नियंत्रण प्रणाली के छूट दी गई है। विश्व में जल संकट सन्निकट है तथा अंधाधुंध दोहन से पेयजल प्राकृतिक तेल की तरह मंहगाई की ओर अग्रसर है। पानी का वर्तमान संकट इसलिए भी बढ़ने वाला है कि समय के साथ इसका दोहन करने वालों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है तथा मांग एवं आपूर्ति के बीच असन्तुलन की दर बढ़ी है। भविष्य में यह राजनैतिक विवाद एवं झगड़े को बढ़ाएगी। अतः जल संकट के समाधान के लिए अपनी सोच में परिवर्तन करना पड़ेगा। घरों एवं कल कारखानों में न्यूनतम मात्रा में जल उपयोग एवं उसके संरक्षण के वैकल्पिक उपायों को अमल में लाना होगा तथा भू–जल का उपयोग पेयजल तक सीमित करने का प्रयास करना होगा। वास्तविकता यह है कि हम जल का जितना उपयोग करते हैं उसकी उचित निकासी नहीं कर पा रहे हैं और उसे अवैज्ञानिक ढंग से नालों के रास्ते नदियों में प्रवाहित कर देते हैं। किसी भी स्थिति में नदियों में इतना जल नहीं होता कि वे पूरी गंदगी को ढो सके। फलस्वरूप नदियां बड़े नाले का स्वरूप ग्रहण करती जा रही हैं।

अफ्रीकी देशों में युगाण्डा एवं सेनेगल ने जल प्रबंधन की व्यवस्था स्वायत्तशासी निकायों को सौंप रखी है जिसका प्रबंधन पूरी तरह उस क्षेत्र के विशेषज्ञ करते हैं। उनकी तुलना में भारत में जल प्रबंधन राज्य का उत्तरदायित्व है। पर्याप्त मानव बल के रहते हुए निष्क्रिय नौकर शाही जल प्रबंधन की व्यवस्था संभाल नहीं पाती। जल संचयन की प्रक्रिया एशियाई देश सिंगापुर से सीखी जा सकती है जिसने समुद्री जल को पीने योग्य बनाया हैं। भवनों एवं पुलों का निर्माण इस विधि से किया गया है कि वर्षा–जल का संचयन किया जा सके। इसी क्रम में उसने उद्योगों को अन्य स्थानों पर स्थापित कराया है। जल का समाधान समाज अब अपनी ही पहल पर कर सकता है। जैसे– जैसे समाज व्यवस्था एवं विकास की विकृतियों को पहचानते हुए अपने पैरों पर खड़ा होता है, उसकी समस्यायें स्वयं हल होने लगती हैं।

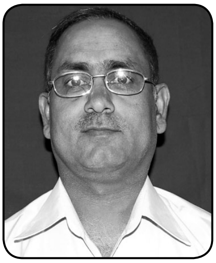

माँ की मूरत सारी हैं

श्री प्रभाकर दुबे,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,

जन्म दिया जिसने जीवन दे,
मनोयोग से पाला था।
नाना कष्ट उठा करके भी,
जिसने मुझको ढाला था।।

जो कुछ मैं हूँ देन उसी की,
यह कैसे इन्कार करूँ।
चाहा नहीं कभी उसने कुछ,
न यह सच्चाई स्वीकार करूँ।।

जब से होश संभाला मैंने,
कभी न हिम्मत हारी थी।
करुणा, क्षमा, दया की मूरत,
वह अपने में न्यारी थी।।

अक्षर ज्ञान बहुत कम था,
पर जीवन का अनुभव सारा था।
सहनशीलता के कारण वह,
श्रद्धा की अधिकारी थी।।

कठिन समय जब–जब आया,
तब बनी ढाल कभी हटी नहीं।
दिया सहारा पल–पल उसने,
बाधाओं से डरी नहीं।

आज नहीं है, सोच कभी,
जब सिहरन मन में होती है।
क्षमाशीलता की वह मूरत,
प्रतिबिम्बित सी होती है।।

माँ के ऋण से कर सकते हैं,
अपने को क्या कभी उऋण।
बहुत कठिन है उत्तर इसका,
इस जीवन में कभी नहीं।।
हर नारी में माँ की यह,
अद्‌भुत रूप निराली है।
दृष्टि बदल कर देख सको तो,
माँ की मूरत सारी है।।

ज्ञान के इसी कमी के कारण,
हाहाकर मचा है भारी।
झूल रहे है नौजवान सूली पर,
असंतों की बारी है।।

भारत माँ की मिट्टी में,
खुशबू ऐसी न्यारी है।
दृष्टि बदल कर देख सको तो,
माँ की मूरत सारी हैं।।

बाल मन

श्री गोविंद कुमार सिंह,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बच्चे ईश्वर का रूप होते हैं। उनमें प्रकृति के निर्दोष स्वभाव की सहज झलक मिलती है। यही कारण है कि उनके नजदीक रहकर उन्हें बढ़ते हुए देखना और उनके विकास में भागीदार होना मेरे लिए दुनिया का, शायद, सबसे बड़ा सुख है। उनकी तोतली बातें, सहज व्यवहार, बात–बात पर रूठना तथा नई–नई और अनोखी फरमाइशें दुनिया के किसी भी व्यक्ति को सम्मोहित कर सकती हैं साथ ही उनके अनोखे तर्क किसी भी विद्वान व्यक्ति को अपने ज्ञान के पुनर्मूल्यांकन को विवश कर सकते हैं।

मेरी तीन वर्षीय पुत्री को टेलीविजन पर कार्टून कार्यक्रम देखने का बहुत शौक है। टी.वी. से उसकी आंखों पर पड़ने वाले असर को कम करने के उद्देश्य से मैं अनेक प्रकार के बहाने बनाकर उसके टी.वी. देखने को हतोत्साहित करने का प्रयास करता रहता हूँ। जब कभी वह देर रात में टी.वी. देखने की जिद करती है तो मैं उसे समझाता हूँ कि अब कार्टून कार्यक्रम के सारे बच्चे (पात्र) सो गये हैं, अतः अब कोई कार्यक्रम नहीं प्रसारित हो रहा है। बिलकुल इसी प्रकार, सुबह समय से जगाने के लिए मैं उसे गोदी में उठाकर बताता हूँ कि उसके सारे प्रिय कार्टून पात्र जग गये हैं अतः उसे भी जग जाना चाहिए।

एक दिन जब मैंने सुबह–सुबह अपनी पुत्री को जगाकर स्कूल भेजने कि लिए तैयार किया तो उसने अचानक घोषणा कर दी कि आज उसे स्कूल नहीं जाना और वह घर में ही रहकर कार्टून कार्यक्रम देखेगी। उसकी इस घोषणा से मैं आश्चर्यचकित रह गया। मैंने उसे समझाया कि इतनी सुबह टी.वी. पर कोई भी कार्टून कार्यक्रम नहीं आ रहा है। उसने मेरी बात पर रोना प्रारंभ कर दिया और कहा कि मैं तो उससे सदैव बताता हूँ कि सुबह–सुबह सारे बच्चे जग जाते हैं अतः कार्टून वाले बच्चे (पात्र) भी जग गये होंगे और इसीलिए उसे कार्टून कार्यक्रम देखने दिये जायें। मेरे पास उसके तर्क का कोई भी जवाब नहीं उपलब्ध था और मैंने स्वयं को अपने ही तर्कों के मध्य पूरी तरह से फंसा हुआ और विवश पाया।

इस मानसिक प्रतियोगिता में पूरी तरह से परास्त हो जाने और हार मान लेने के पश्चात अगले ही पल मैंने उसके तर्क का जवाब खोज लिया। मैंने उसे प्यार से समझाया कि उसकी

बात बिलकुल सही है और कार्टून के सारे बच्चे जग गये हैं लेकिन अभी वे तैयार होकर अपने–अपने स्कूल जा रहे होंगे इसीलिए अभी कोई भी कार्टून कार्यक्रम टी.वी. पर नहीं आयेगा। साथ ही मैंने उसे यह भी समझाया कि कार्टून के बच्चों की तरह ही उसे भी स्कूल चले जाना चाहिए और वापस लौटने पर उसे अच्छे– अच्छे कार्टून कार्यक्रम देखने को मिलेंगे। वह मेरी बात को, हमेशा की तरह समझकर और सहमत होकर स्कूल चली गई।

तात्कालिक रूप से तो मैने अपनी समस्या का समाधान खोज लिया था परंतु मुझे इस बात का आभास हो गया था कि मेरी बौद्धिक योग्यता अब सदैव बाल मन के तर्कों की कसौटी पर कसी जाती रहेगी। बाल मन की इस चुनौती ने उसके प्रति मेरे आकर्षण को और भी बढ़ा दिया।

गजल

श्री सुशील देवली,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०)

जो रहे हमराज़े हमदम आज बेरहम हो गये।
मेरी कलम कोरे कागज़ अब मेरे हमदम हो गये।।

ये कागज़ कभी खुशी में कभी गम में रोते हैं।
मेरे कागज़ ही मेरे तन्हा पलों के मरहम हो गये।।

जो रहे हम निवाला हम पियाला ज़िंदगी भर।
ज़रूरतों के दौर में देखो कितने बेशरम हो गये।।

दोस्ती नातों को हिसाब से ना तौलो ऐ सुशील।
दोस्ती में कान्हा बिन हिसाब सुदामा के मुलाज़िम हो गये।।

ग़ज़ल

श्री विनीत कुमार राही,
लेखापरीक्षक

कागज की कश्ती हूँ, तूफान से डर लगता है।
जिस्म बेजान है मगर, शमशान से डर लगता है।।
इन्सानों ने ऐसा खेल खेला है इन्सानियत से।
इन्सान हूँ फिर भी, इन्सान से डर लगता है।।

जो हँसती बस्तियों को, मातम में डुबो दे।
दहशत के ऐसे, सामान से डर लगता है।।
ज़मीर बिकता देखता हूँ, जब अपनी इन आँखों से।
खुदा कसम ख़्याल–ए अंजाम से डर लगता है।।

जी चाहता है बदलकर, रख दूँ सारी कायनात को।
बहुत बनता है ये राही, इसी इल्ज़ाम से डर लगता है।।
राहें सच में, पुराने मकान की तरह बिखरी पड़ी हैं।
लोग ईटें न निकाल ले जायें, इस ख़्याल से डर लगता है।।

खुद को मिलने वाली, सजा का खौफ़ नहीं मुझको।
कहीं कोई खता न कर बैठूँ अरमान से डर लगता है।।
लिहाफ आसमां का है, बिस्तर ज़मीं का है।
कहीं बिजली न गिरा दे, ऐसे आसमान से डर लगता है।।

कहीं उगा कहीं कटा, फिर उगा फिर कटा।
यही उसकी मर्ज़ी है, तो ऐसे फ़रमान से डर लगता है।।
तेरे हाथों की दस्तक का, मुंतजिर मेरा दर भी।
तुझे खुद न बुला सकूँगा, अपनी शौकत–ए–शान से डर लगता है।।

नुकसान सिर्फ दिलों का ही नहीं है।
जाएगी मेरी जान, तेरी जान से डर लगता है।।

एक प्रार्थना पत्र ऐसा भी

श्री कलवंत सिंह,
लेखापरीक्षक

सेवा में,

उपमहालेखाकार (प्रशासन)

विषयः दुपहिया वाहन के अग्रिम की स्वीकृति के संबंध में।

महोदय / महोदया,

बहुत ही कष्टपूर्वक निवेदन है कि कुछ वर्षों पूर्व जब लम्ब्रेटा और प्रिया जैसे मनमोहक एवं सरपट दौड़ने वाले दुपहिया वाहन दम तोड़ रहे थे ऐसे समय में मैंने अपनी वित्तीय दशा को अनदेखा करते हुए चेतक नाम का तथाकथित आधुनिक तकनीक से युक्त एक दुपहिया वाहन खरीदा। इसे पा लेने के बाद तो जैसे मेरा जीवन ही बदल गया। जीवन के हर क्षेत्र में मैं आगे रहने लगा चाहे वह अल–सुबह कार्यालय पहुँचना हो या फिर शाम को कार्यालय से घर, मेरा कोई सानी न था। बस यूँ समझिये कि मुग़ल–कालीन इतिहास के पन्नों में जिस तरह शूरवीर महाराणा प्रताप का चेतक दौड़ा था बस उसी तरह मेरे जीवन के हर पन्ने पर मेरे अपने अति प्रिय चेतक की छाप थी।

जैसा आप स्वयं जानते हैं कि पिछले कुछ वर्षों से विज्ञान एवं तकनीक ने मनुष्य के जीवन को जो गति प्रदान की है उसकी व रु रु रु रु रु ....म ने न जाने कितनी ही पुरातन यांत्रिक शक्तियों को झकझोर दिया है और मेरा....मेरा अपना प्रिय चेतक भी इससे अछूता नहीं है।

आपके संज्ञान में लाते हुए मैं यह कहना चाहता हूँ कि अपने इस अति प्रिय बुजुर्ग हो चुके साथी को.......... जिसे मैं निरंतर किक मार–मार कर या उल्टा–टेढ़ा करके जो यातनाएं दे रहा हूँ उससे मुक्ति का रास्ता तलाश रहा हूँ। क्योंकि शहर के बड़े–बड़े अस्पतालों (गैराज) के डॉक्टरों (यांत्रिकों) का भी कहना है कि इस चेतक को कर्क रोग जैसी लाइलाज बीमारी है, अतः इसे मुक्ति दे देना ही एक सरल उपाय होगा। कभी–कभी मैं जब इस निरीह हो चुके प्राणी को बिस्तर अर्थात स्टैंड पर देखता हूँ तो सोचता हूँ कि कैसा है यह अद्वितीय शक्ति–पुंज !

थक कर भी थका जान नहीं पड़ता। काश......काश ए खुदा मैं ताउम्र इसको खुद से जुदा न करूँ।

जैसा कि महोदय/महोदया को विदित है कि वर्तमान में पुरातन समय के पवित्र, पावन व उज्ज्वल रिश्तों को आधुनिक तकनीक ने मैला कर दिया है तो मैं भी उससे अछूता नहीं हूँ। मैं जब अपने बच्चों को स्कूल ड्रॉप करने जाता हूँ तो अनेक लोग उलाहना भरी निगाहों से मेरे प्रिय को देखते हैं। जब भी मैं पत्नी के साथ घर से बाहर निकलता हूँ लोग राक्षसों जैसे हा...हा...हा.... हंस देते हैं। मेरा यह प्रिय धुएँ के बड़े–बड़े गुबार छोड़कर ऐसे लोगों का मुँह तो जरूर काला कर देता है परंतु अब यह पीड़ा असहनीय हो गयी है।

अतः हे करुणामय! आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया शीघ्र ही मेरे दुपहिया वाहन का अग्रिम स्वीकृत कीजिये, ताकि मैं इस तेज रफ्तार ज़िंदगी में फिर से स्वयं को शामिल कर सकूँ।

भवदीय,

(•••)

दिनांकः 21/07/2014
स्थानः बिंदाल पुल
समयः 1:30 बजे (अपराहन) बच्चों को स्कूल से घर ले जाते वक्त

व्यक्ति अकेले पैदा होता है और अकेले मर जाता है और वो अपने अच्छे और बुरे कर्मों का फल खुद ही भुगतता है और वह अकेले ही नर्क या स्वर्ग जाता है।

चाणक्य

नंदा राजजात – धार्मिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

श्री डी०एन० मिश्रा,
लेखापरीक्षा अधिकारी

नंदा राजजात महज धार्मिक यात्रा ही नहीं, उत्तराखंड की संस्कृति का प्रतिबिम्ब भी है। नंदा के जागरों (गीतों) में गढ़वाल की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के साथ–साथ लोक जीवन की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं, कठिनाइयों, सामाजिक जीवन की परम्पराओं आदि का चित्रण हुआ है। नंदा गढ़वाल कुमाऊँ में एक आराध्य देवी ही नहीं, अपितु एक रक्षक के रूप में भी पूजी जाती हैं। यह यात्रा देव भूमि में मानव और देवताओं के सम्बन्धों की अनूठी परंपरा की अभिव्यक्ति है। भगवान शिव और देवी नंदा के साथ मानवीय रिश्ते और श्रीयंत्र के माध्यम से गढ़वाल नरेश भगवान बद्रीनाथ से सीधी बातचीत के उदाहरण यहाँ मिलते हैं। यह यात्रा पहाड़ के कठोर जीवन की कहानी है, जिसमें पहाड़ में ध्याणी (विवाहिता लड़की) के संघर्षों का वर्णन है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यात्रा धार्मिक के साथ–साथ प्रकृति व ग्रामीण अंचलों की परंपरा को समझने का भी एक माध्यम है। यात्रा में जहाँ यात्री, प्रकृति के रौद्र रूप से परिचित होते हैं वहीं वेदनी बुग्याल की सुन्दरता देखने का भी अवसर मिलता है। राजजात में चलने वाले भक्तों व पर्यटकों को हिमालयी क्षेत्र की वनस्पति, पशु–पक्षियों व क्षेत्र की पारिस्थितिकी को समझने का अनूठा अवसर प्राप्त होगा।

लोक मान्यता है कि हिमवंत और मैणा की सात पुत्रियों में सबसे छोटी नंदा का विवाह कैलाशवासी शिव से किया गया था। बारह वर्ष तक जब पिता हिमवंत ने नंदा की कोई सुध नहीं ली तो उसने माता–पिता को पुकारा। इस दौरान उसके कुछ अणु धरती पर गिर पड़े, जिससे पिता के देश (राज्य) में उथल–पुथल मच गई। वे चिंतित होकर महर्षि नारद के पास पहुँचे। नारद ने उन्हें सलाह दी कि हेमंत ऋतु में सौगात लेकर नंदा को मनाने जाएँ। इन्हीं स्मृतियों को जीवित रखने के लिए तब से नंदा राजजात का आयोजन किया जाता है।

राजजात की ऐतिहासिकता के संबंध में विभिन्न मत हैं। कहा जाता है कि उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में क्षेत्र में गोरखाओं के आक्रमण के दौरान अभिलेखों को नष्ट कर दिया गया था। राजजात की शुरुआत आठवीं सदी के आस–पास हुई मानी जाती है। यह वह समय था जब

आदि शंकराचार्य ने देश के चार कोनों में चार पीठों की स्थापना की, बद्रीनाथ पीठ उसमें से एक महत्वपूर्ण पीठ है।

चाँदपुर गढ़ी के राजा भानुप्रताप, भगवान बदरीविशाल के उपासक थे। ऐसी मान्यता है कि देवताओं से वार्ता करने के लिए उनके पास श्रीयंत्र था। राजा को बदरीविशाल ने संदेश दिया कि वह राजा कनकपाल से अपनी पुत्री का विवाह कर दें, इसी से उनका वंश चलेगा। जब विवाह सम्पन्न हुआ तो राजा कनकपाल को राज्य के साथ ईष्ट देवी के रूप में नंदा की प्राप्ति हुई। भानुप्रताप के बाद जब कनकपाल चाँदपुर गढ़ी के राजा बने तब उन्होंने अपने भाई को चाँदपुर गढ़ी के पास बसाया जिसे कालांतर में कांसुवा गाँव के नाम से जाना जाने लगा। कांसुवा के राजकुँवरों को ही बाद में राजजात की जिम्मेदारी सौंपी गयी।

यात्रा की ऐतिहासिकता सिद्ध करने के लिए रूपकुंड में मिले नर कंकाल तथा वशुवावासा में स्थित सिद्ध विनायक भगवान गणेश की काले पत्थर की मूर्ति है, जो आठवीं सदी से यहाँ रखी गई बतायी जाती है। गढ़वाल के परंपरागत नंदा जागर राजजात की कहानी की पुष्टि करते हैं। नौटी और कुलसारी के श्रीयंत्र भी इस कहानी को आगे बढ़ाते हैं। जियोलॉजिकल सर्वे आफ इंडिया द्वारा कुछ अन्य सहयोगियों के साथ रूपकुंड के नर कंकालों के काल परीक्षण के नतीजे यह बताते हैं कि ये नर कंकाल नवीं सदी के आस–पास के हैं। इन परीक्षणों में रूप कुंड के कंकाल भारतीय लोगों के बताये गए हैं। इनमें अधिकांश नर कंकाल सामान्य से अधिक लम्बे लोगों के हैं जो गढ़वाल के प्रचलित नंदा जागरों के अनुसार कन्नौज के राजा जसधवल के दरबारियों के हो सकते हैं जिससे चाँदपुर गढ़ी के राजा की बेटी बल्लभा का विवाह हुआ था। कन्नौज में व्याप्त अकाल से मुक्ति पाने के लिए राज पुरोहित द्वारा राजजात में शामिल होने की सलाह राजा जसधवल को दी गयी थी। राजा जसधवल राजजात में पूरे राजसी साजो–सामान के साथ शामिल हुये। राजा ने यात्रा में विलासिता की वस्तुओं का त्याग नहीं किया और पातरों (नाचने वाली औरतों) को भी यात्रा में नचाते रहे। जागरों में उल्लेख है कि राजा के दल के सदस्यों की रूपकुंड के पास बर्फीले तूफान की चपेट में आकर मृत्यु हो गयी। नंदा के जागरों में नंदा का समाज से संबंध, नंदा की कठिन जीवन यात्रा, कन्नौज के राजा जसधवल का रानी बल्लभा के साथ राजजात में शामिल होना तथा राजा का दरबारियों के साथ दुखद अंत का उल्लेख जागरों में है।

नंदा राजजात 12 वर्ष या उससे अधिक समयांतराल में होती है। राजजात तब होती है जब देवी का दोष (प्रकोप) लगने के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। नंदा के मायके क्षेत्र में चौसिंग्या खाडू (चार सींग वाला मेढ़ा) पैदा हो जाता है। कांसुआ के कुँवर, नौटी जाकर राजजात की

मनौती माँगते हैं और बसंत पंचमी के दिन यात्रा की घोषणा होती है। एक ओर यात्रा नौटी से आरम्भ होती है, दूसरी ओर कुरुड़ के मन्दिर से भी दशोली और बधाण की डोलियाँ राजजात के लिए निकलती हैं। इसके अलावा अलग–अलग क्षेत्रों से छंतोलियाँ और डोलियाँ यात्रा में शामिल होती हैं। कुमाऊँ में भी अल्मोड़ा एवं नैनीताल से डोलियाँ राजजात में शामिल होती हैं। कुमाऊँ की डोलियाँ राजजात में नंदकेशरी के पास मिलती हैं। इसके बाद राजजात मुंडोली, बाण, गैरोलीपातल, पातर नचौणिया, रूपकुंड होते हुए होमकुंड पहुँचती है। होमकुंड में पूजा के बाद चौसिंग्या खाडू को छोड़ दिया जाता है और लोक मान्यता है कि वह हिमालय में लुप्त होकर नंदा के ससुराल कैलाश में प्रवेश कर जाता है।

नंदा राजजात उत्तराखंड की संस्कृति का प्रतिबिम्ब है। यह राजजात उत्तराखंड ही नहीं अपितु भारत की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है। यह केवल एक धार्मिक यात्रा ही नहीं बल्कि प्रकृति व ग्रामीण अंचलों की जीवन पद्धति एवं परंपरा को समझने का भी एक माध्यम है, साथ ही इससे राज्य के पर्यटन को भी एक नई दिशा मिली है।

मैं जो भी हूँए या होने की आशा करता हूँए उसका श्रेय मेरी माँ को जाता है।

अब्राहम लिंकन

कौन पूछे जाके नदियों के किनारों से

श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कौन पूछे जाके नदियों के किनारों से।
कौन पूछे जाके लौटती बहारों से।।

कौन था जो मर गया सर टकराकर।
कौन पूछेगा जाके पत्थर की दीवारों से।।

किसने बनायी थी जाति किसने बनाया था धर्म।
किसने अलग किये हमारे कर्म।।

किसकी अस्मत लूटी गयी उस रात।
कौन पूछेगा जाके सूने बाज़ारों से।। कौन था जो..........

प्यार को तो पूजा जाता रहा है सदा।
फिर वही प्रेम कैसे हो गया गुनाह।।

किसकी बेटी जली किसका बेटा मरा।
कौन पूछेगा जाके समाज के पहरेदारों से।। कौन था जो.........

किसने कहा कि मार दो बेटियों को गर्भ में।
किसने कहा कि मार दो प्रेमियों को गर्व में।।

कौन है जो छीन लेता है प्राण बिना अधिकार के।
कौन पूछेगा जाके उस पंचायती सरकार से।। कौन था जो.........

बंद करो यह रीति अब और नहीं चलेगी।
अब और कोई बेटी समाज की बलि नहीं चढ़ेगी।।

कौन कहकर यह सब भी करता रहा मनमानी।
कौन पूछेगा जाके अब युवा बेचारों से।

कौन था जो मर गया सर टकराकर।
कौन पूछेगा जाके पत्थर की दीवारों से।।

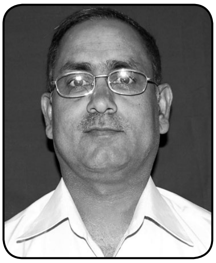

ईर्ष्या एवं प्रतिशोध की भावना से बचें

श्री प्रभाकर दुबे,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ईर्ष्या एवं प्रतिशोध में दोनों ही शब्द चिर परिचित एवं सर्व साधारण के लिए गम्य हैं तथा इनमें कोई नयी बात नहीं दिखती। ईर्ष्या का अर्थ है जलन। आस–पास दूसरे की उन्नति से अप्रसन्न होना तथा उसके प्रति मन में द्वेष एवं दुर्भावना को स्थान देना। स्वस्थ प्रतियोगिता के बजाय नफ़रत एवं मानसिक क्लेश को बढ़ावा देना, परिणामस्वरूप स्वयं अपने तथा दूसरे के जीवन को कलुषित विचारों के कारण कष्ट में डालना एवं पास पड़ोस में नकारात्मक वातावरण का सृजन करना। ईर्ष्यालु व्यक्ति हर व्यक्ति में केवल कमियां ढूँढता है तथा उसे आलोचना का विषय बनाता है, जबकि इसके विपरीत रचनात्मक कार्य करने वाले लोग सृजन में विश्वास करते हैं। यदि कहीं कोई कमी है भी तो उसे सुधारने का प्रयास करते हैं न कि बात का बतंगड़ बनाते हैं। ईर्ष्या एक मनोविकार है। इसका कोई मूर्त आकार नहीं होता, और न ही स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता हैं। यह महसूस किए जाने वाला एक ऐसा मनोरोग है जो इससे ग्रसित व्यक्ति के आचरण एवं व्यवहार के द्वारा समय–समय पर दृष्टिगोचर होता है। कहीं–कहीं तो स्पष्ट रूप से सुनने को मिलता है कि उक्त व्यक्ति बड़ा ईर्ष्यालु है। हमारी सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम अपनी उन्नति तथा अपने विकास से कम खुश होते हैं तथा पड़ोसी की उन्नति से अधिक दुखी होते हैं। हमारा घर बने या न बने पड़ोसी का घर कैसे बन गया इसकी चिंता अधिक रहती है। इस रोग से ग्रासित होने वालों की संख्या एक नहीं अनेक है। हमारे ऋषि–मुनियों द्वारा चिह्नित मानव जीवन के छः शत्रुओं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, एवं मात्सर्य में से यह अन्तिम रोग है। जिस प्रकार मनुष्य शरीर में लगभग हर रोग के कीटाणु विद्यमान रहते हैं लेकिन शरीर की रोग अवरोधी क्षमता के कारण ये अपना प्रभाव नहीं दिखा पाते पर ज्योंही रोग अवरोधी क्षमता घटती है रोग के कीटाणु प्रभावी हो जाते हैं। उसी प्रकार ईर्ष्या भी हर व्यक्ति के अन्दर विद्यमान रहती है पर ज्ञान रूपी अवरोधी क्षमता के कारण यह दबी रहती है और ज्योंही इसको मौका मिलता है यह अपना प्रभाव दिखाने लगती है और मस्तिष्क को विकार विकृत कर देती है। इससे न केवल एक व्यक्ति बल्कि बहुत बड़ा समुदाय एवं कभी–कभी तो बड़े–बड़े राष्ट्र भी ग्रसित हो जाते हैं। संत महात्माओं एवं विद्वद जनों ने इस संबंध में काफी शोध किया है, जो हमें पढ़ने और सुनने को मिलता है। यह शारीरिक व्याधि नहीं बल्कि मानसिक आधि है जिनके निराकरण का उपाय ढूँढता आवश्यक हैं।

प्रतिशोध ईर्ष्या से भी भयानक तथा कष्टप्रद मनोरोग है जो कहीं न कहीं विनाश का कारण बनता है। ईर्ष्या एवं प्रतिशोध एक दूसरे के पूरक हैं जो आस–पास अपना प्रतिद्वंदी खोज लेते हैं। छोटी–छोटी घटनाएं जिनका इतने लंबे जीवन काल में कोई महत्व नहीं होता, प्रतिशोध की भावना के कारण बड़ी बन जाती हैं तथा इसके दुष्प्रभाव का आकलन असंभव हो जाता है। महाभारत भी इसका स्पष्ट उदाहरण है। धृतराष्ट्र के साथ गांधारी के विवाह ने शकुनी के मन में प्रतिशोध का बीज क्या बोया बहन का सब कुछ जलाकर राख कर दिया। यह एक ऐसा मनोविकार है जो मनुष्य का सुख चैन सब कुछ नष्ट कर देता है। इसका पहला शिकार विवेक एवं सोचने की शक्ति होता है जो मानव को दानव बनने पर मजबूर कर देता है। द्रोणाचार्य एवं द्रुपद दोनों अच्छे मित्र एवं एक ही गुरु के शिष्य थे। साथ रहना, साथ पढ़ना एवं आश्रम में सभी कार्य एक साथ करना उनकी दिनचर्या में शुमार था पर द्रुपद द्वारा राजमद में की गयी छोटी–छोटी भूलों का द्रोणाचार्य के मन पर इतना प्रभाव हुआ कि दोनों ही महारथियों को अपना सर्वस्व गवांकर उसकी कीमत चुकानी पड़ी। ईर्ष्या के भाव के कारण ही द्वेष उत्पन्न होता है जो तकरार का कारण बनता है और इसकी परिणति प्रतिशोध की भावना से शुरू होकर विनाश का कारण बनती है। आज दुनिया के कई राष्ट्र एक दूसरे को मिटाने पर उतारू हैं। जबकि वे अपने को सभ्य एवं विकसित राष्ट्र की श्रेणी में रखते हैं तथा मानवाधिकार के सबसे बड़े हिमायती हैं।

अब प्रश्न उठता है कि उपर्युक्त दोष ही मनोरोग की श्रेणी में आते हैं एवं इन्हें बखूबी चिह्नित कर लिया गया है तो इनका निदान क्या है? कारण कि वर्तमान सामाजिक परिवेश में इनका प्रभाव पहले से कहीं ज्यादा देखने को मिलता है। श्रीमद् भगवद्गीता के चौथे अध्याय में अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से यह प्रश्न किया कि प्रभु कोई ऐसा कार्य नहीं जिसमें कामना न निहित हो, फिर निष्काम कर्म कैसे संभव है तो भगवान श्री कृष्ण द्वारा बताये गये तरीकों में से एक यह भी अत्यन्त उपयोगी कार्य था कि यदि मनुष्य का आचरण ईर्ष्या रहित हो तो उसके द्वारा किये गये कार्य भले ही कामना से युक्त हों पर वह कहीं–न–कहीं समाज की भलाई के लिए होते हैं तथा निष्काम कर्म की श्रेणी में ही आते हैं।

यदृच्छा लाभ संतुष्टो द्वंदातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धा व सिद्धौ च कृत्वापि न निवध्यते।।

यानि ईश्वर की इच्छा से जो प्राप्त हो उसमें संतुष्ट रहना, सम्पूर्ण इंद्रियों से अपने को ऊपर उठाना, ईर्ष्या रहित आचरण बनाना, एवं हर स्थिति में समभाव में रहने से मनुष्य के सभी कार्य निष्काम कर्म की श्रेणी में आ जाते हैं तथा वह कभी भी कर्म बंधन में नहीं बंधता। अँग्रेजी की एक कहावत है "टु फॉरगिव इज़ डिवाइन" अर्थात क्षमा करना ईश्वरीय कार्य है। आध्यात्मिक रूप से सभी प्राणियों में ईश्वर का अंश विद्यमान है और ईश्वर ही सत्य है बाकी सभी असत्य मिथ्या,

क्षण भंगुर और नाशवान हैं जैसा कि हमारे धर्म शास्त्रों में वर्णित है। यदि हम इसका गहराई से अनुशीलन करें तथा इसे तत्व से समझने का प्रयास करें तो हमारे अन्दर के विकार अपने आप समाप्त होने लगते हैं तथा निर्मल, पावन, मन, मस्तिष्क के सम्पूर्ण विकारों को धीरे–धीरे स्वतः समाप्त कर देता है एवं हमारे अन्दर क्षमा, दया, करुणा एवं प्रेम जैसे सद्‌गुणों का समावेश होने लगता है जो हमारे अन्दर के मनोविकारों को शनैः शनैः समाप्त कर देता है। सभी महान आत्माओं ने अपना सम्पूर्ण जीवन परोपकार एवं समाज की भलाई में लगाया और यही कारण था कि उनका कार्य मनुष्यत्व से देवत्व की श्रेणी में आ गया ।

अपने सद्‌गुणों के कारण ही गाँधी जी महात्मा कहलाये तथा यहाँ तक की अँग्रेजों के प्रतिशोध एवं नफ़रत की भावना भी उनके सादा जीवन एवं उच्च विचार के आगे नतमस्तक हो गयी और यही कारण था कि उनके कुशल नेतृत्व में हम आजादी प्राप्त कर सके तथा एक स्वतंत्र देश के रूप में अपनी पहचान बनाने में समर्थ हो पाये।

निष्कर्ष यह निकलता है कि हम अपना आचरण सुधारें तथा लोगों की कमियाँ देखने के बजाय उनकी अच्छाइयों को देखें एवं आलोचना की बजाय समालोचक बनें तथा अपनी सोच को सकारात्मक बनायें। घृणा, द्वेष, ईर्ष्या एवं प्रतिशोध की भावना को दरकिनार कर क्षमा, करुणा, दया, तथा प्रेम को अपने विचार एवं व्यवहार में स्थान दें तो समस्या का समाधान आसानी से हो सकता है एवं बड़ी से बड़ी बाधायें स्वतः समाप्त हो सकती हैं। श्रीमद् भगवद्‌गीता के अट्ठारहवें अध्याय में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि हे अर्जुन!

अहंकारं बलं दर्प कामं क्रोध परिग्रहम ।
विमुच्य निर्ममः शांतो ब्रह्म भूयात कल्पते।।

अर्थात अहंकार, बल, घमंड, काम, क्रोध और परिग्रह का त्याग करके निरन्तर ध्यान योग के परायण रहने वाला, ममत्व रहित और शांत पुरुष सच्चिदानन्द घन ब्रह्म में स्थित होने का पात्र होता है। उपर्युक्त श्लोक से स्पष्ट है कि आचरण ही मनुष्य को देवता की श्रेणी में ला देता है तथा अच्छे आचरण तथा सद्‌गुणों के द्वारा अनेक कठिनाईयों से न केवल बचा जा सकता है वरन जगत एवं मानव जन के कल्याण में अपना अमूल्य योगदान भी दिया जा सकता है, इसमें दो राय नहीं है।

कोई भी उस व्यक्ति से प्रेम नहीं करता जिससे वो डरता है।
अरस्तु

नारी से ही चलता सारा जहान है

चित्रा दुबे सुपुत्री श्री प्रभाकर दुबे,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आज फिर एक दुर्घटना हो गई।
एक हिम्मती लड़की आज फिर लाचार हो गई।
हो गई न जाने कितनों की आँखें नम।
आज फिर वो बिना कुछ बोले रह गई।
आज फिर एक दुर्घटना हो गई।।

माँ की गोद में पहली बार आँखें खोली।
परंतु पूरे परिवार ने मनाई दुख की होली।
कोई कहता मनहूस है, तो कोई कहता बोझ है।
परंतु माँ ने उसे सीने से लगाया।
और सबको बताया कि उसके मन में अपनी बेटी को पालने का पूरा जोश है।।

पूरी दुनिया से लड़कर।
अपनी बेटी को पढ़ा लिखाकर।
उसे ऊंचाइयों पर पहुँचाया उसकी माँ ने।
अपनी बेटी की हिम्मत को बढ़ाकर।।

एक दिन वह सड़क पर निकली।
अपने काम से घर को वापस थी चली।
तभी उसे एहसास हुआ।
खतरे का उसे आभास हुआ।।

लगने लगा अब उसे था डर।
कहीं ऐसा न हो कि पहुँच ही न पाऊँ मैं घर।
मुड़–मुड़ के देखती, तेज–तेज थी चलती।
परंतु दरिंदों के हाथ लगने से कैसे वह बचती।।

घेर लिया उसे चारों तरफ से।
कैद कर लिया उसे हर एक नजर ने।
कोई और न थे ये लोग।

ये थे उसके ही रिश्तेदार।
इस बार कर दी जिन्होंने अपनी सारी हदें पार।।

वो चिखती रही, चिल्लाती रही।
भरी भीड़ में मदद की भीख मांगती रही।
एक इन्सान ने भी उसे पलट के न देखा।
उसकी चीख को सबने अनसुना कर दिया।।

रोई वो बिलख–बिलख कर।
सहम के रह गई वो लंबे समय तक।
डरती थी बाहर जाने के नाम से।
डरती थी अब दरिंदों के काम से।।

माँ फिर भी उसके साथ थी।
हाथों में लिए उसका हाथ थी।
आँसू उसने भी बहाए खून के।
परन्तु उसे हौसला दिया कि वह दरिंदों को चीर दे।।

तब वह उठी खड़ी हुई।
और अपनी लड़ाई लड़ने के लिए चल पड़ी।
हर ताने को वो सह गई।
उन दरिंदों को मौत के घाट उतारने के लिए।
हर मुश्किल को वो चीर गई।।

आखिर वो दिन आ ही गया।
जब फांसी पे था उसने दरिंदों को लटकाया।
हिम्मत से लड़ी उसने अपनी लड़ाई।
और आखिकार जीत, थी उसने पाई।।
नारी चुप है, नारी शांत है।
इसका अर्थ यह नहीं कि बिकाऊ उसका सम्मान है।
हाथ लगाने से पहले अनगिनत बार सोचना।

नजर डालने से पहले अपने भविष्य के बारे में जरा एक बार सोचना।।
नारी कमजोर नहीं, बलवान है।
नारी असहाय नहीं, शक्तिवान है।
इज्जत दोगे तभी इज्जत पाओगे।
क्योंकि नारी से ही चलता सारा जहान है
क्योंकि नारी से ही चलता सारा जहान है

मैं न होता

श्री महावीर सिंह रावत,
सहायक लेखाधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०)

मैं न होता
ये दुनिया कहाँ होती
न ये दर्द होता
न दर्द की दवा होती।

न मौसम–ए–गुलज़ार होता
न फिज़ाओं में बहार होती
चारों तरफ गुम होता
गलियां भी सुनसान होती।

कौन किसका होता
पूछने की ज़रूरत न होती
रस्म–ओ–रिवाज़ निभाने की
किसको फुरसत होती।

न फ़रियादी होता
न फ़रियाद की जरूरत होती
न कोई ख़िदमत करता
न अलफ़ाज़ों की क़द्र होती।

सांझ ढलती तो
न तन्हाइयाँ होती
महबूब की राहों में
आँखें बिछाये माशूका कहाँ होती।

भूखे पेट में
आग भी न जलती
न चूल्हा होता
न चाशनी चढ़ती।
न छलावा होता
न जज़्बातों की ज़रूरत होती
न फ़रिश्ता होता
हाथ फैलाने की कहाँ ज़रूरत होती।

न ये दर्द होता
न तन्हाइयाँ होती
चुपके–चुपके आँसू
बहाने की कहाँ ज़रूरत होती।

पर्दे के पीछे
ये ज़मी कहाँ गुलज़ार होती
न चाँद–सितारों को
जगमगाने की ज़रूरत होती।

न ये बाग होता
न फूलों से सौगात होती
न माली के हाथों
किसी कली की मौत होती।

मैं न होता
ये दुनियाँ कहाँ होती
न ये दर्द होता
न दर्द की दवा होती।

समय का सदुपयोग

आरती बिष्ट,
(एम.टी.एस.)

तुम हँसते हुए आग पे चल सकते हो,
तुम चाँद से आगे भी निकल सकते हो।
यदि ठीक तरह शक्ति का उपयोग करो,
तुम समय की धारा को बदल सकते हो।।

जीवन में कुछ क्षण ऐसे होते हैं जिनके खोने पर मनुष्य केवल पश्चाताप ही कर सकता है। जीवन की सफलता समय के महत्त्व को जानने वाले के लिए है। मनुष्य जीवन कठिनाई से मिलता है। इसमें जो मनुष्य, कुछ अच्छे काम कर समाज पर छाप डाल जाएगा, उसका नाम अमर हो जाएगा।

समय का महत्व

'रात गंवाई सोय कर, दिवस गंवायो खाय? हीरा जन्म अमोल था, कौड़ी बदले जाय'— कबीर का यह कथन सत्य ही है। जो मनुष्य समय के महत्व को नहीं जानता, उसका हीरे जैसा कीमती जीवन व्यर्थ चला जाता है। यदि हमने अपना समय जीभ के स्वाद में, क्लबों में और सैर—सपाटों में व्यर्थ कर दिया तो एक समय ऐसा आएगा जब हमें अपनी भूल पर पश्चाताप करने का भी मौका नहीं मिलेगा।

जीवन की सफलता

विद्यार्थी जीवन में जिसने समय को व्यर्थ नहीं गंवाया, उसका जीवन सफल है। इस काल में ही विद्यार्थी समय के महत्व को जानकर भावी जीवन—स्वप्न को साकार कर सकता है, असम्भव को सम्भव कर सकता है, कठिन को सरल कर सकता है। समय का समुचित उपयोग ही सफलता की कुँजी है।

समय का उचित उपयोग

आलस्य सारी मुसीबतों की जड़ है। 'काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलै होयगी, बहुरि करैगा कब'—समय के छोटे से छोटे क्षण को भी नहीं खोना चाहिए। जो काम तत्काल हो गया, वही ठीक है। भविष्य के लिये जो व्यक्ति काम को छोड़ देता है, वह मूर्ख ही है। समय का सही उपयोग तभी है, जब मनुष्य अवसर चूकता नहीं है।

समय की पाबन्दी

सारा संसार समय के अधीन है। सूर्य, चन्द्र, तारे, सभी समय पर निकलते हैं और समय पर ही छिप जाते हैं। जब प्रकृति भी समय की पाबन्द है तो मनुष्य समय का पाबन्द क्यों न हो? मानव को समय का पाबन्द होना चाहिए। उठना, खाना, सोना आदि सब नियमित होना चाहिए।

खाली दिमाग शैतान का घर

जीवन में समय को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। खाली बैठना, गप्पें हांकना, परनिन्दा का आनन्द, निरुद्देश्य सड़कों पर घूमना, निरर्थक पुस्तकें पढ़ना, मनुष्य की बरबादी के चिह्न हैं। खाली बैठे मनुष्य को शरारत ही सूझेगी। उसमें बुरी भावनाएँ घर करेंगी। वह मनुष्य के विकास के लिए घातक ही सिद्ध होगा।

समय परिवर्तनशील है

जीवन में समय बहुत कीमती होता है। समय परिवर्तनशील है। बीता समय फिर हाथ नहीं आता है। जिस प्रकार जीवन का एक भी वर्ष निकल जाए तो उसको वापस नहीं लाया जा सकता है, समय भी उसी प्रकार वापस नहीं आ सकता। चार दिन की परीक्षा पर जीवन का महत्वपूर्ण एक वर्ष निर्भर करता है। जो आज है वह कल नहीं। कल था बचपन, आज जवानी तो कल बुढ़ापा आएगा। समय किसी को नहीं छोड़ता।

जीवन की मधुरता का रस पीना चाहते हो तो समय के मूल्य को जानो। समय का सदुपयोग करते हुए सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते जाओ। निःसन्देह समाज तुम्हारा अनुकरण करेगा। नियमित रूप से काम करो। शुद्ध विचारों, शुद्ध कर्मों में समय व्यतीत करोगे तो समय तुम्हारे पीछे भागेगा, तुम नहीं।

कोई काम शुरू करने से पहलेए स्वयं से तीन प्रश्न कीजिये . मैं ये क्यों कर रहा हूँए इसके परिण ाम क्या हो सकते हैं और क्या मैं सफल होऊंगा और जब गहराई से सोचने पर इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर मिल जायेंए तभी आगे बढें।

चाणक्य

सिसकती हिन्दी

अलका श्रीवास्तव पत्नी श्री प्रवीण कुमार श्रीवास्तव,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ऐसी लागी अंग्रेजी लगन, 'हिन्दी' भाषा हो गई बेचैन,
वो तो बेचारी–बेचारी कही जाने लगी।
शानो–शौकत में रही, लाखों दिल में बसी,
अब आहिस्ता–आहिस्ता भूली जाने लगी। ऐसी लागी अंग्रेजी........
पहले कॉलेजों से हटी, फिर स्कूलों से हटी,
अब तो नर्सरी में भी, प्रतिबंधित की जाने लगी। ऐसी लागी...........
काफी जोर लगाई, तेरह प्रधानमंत्रियों के पांव छुई,
पर राजभाषा कहलाने की ललक, पूरी न कर पाई। ऐसी लागी...........
भारत की ताज कही जाने वाली "हिन्दी"
अंग्रेजी की अंग्रेजी से साख गंवाती रही।
कभी इस अफसर से उस अफसर तक,

कभी इस दफ्तर से उस दफ्तर तक
बस फाइलों में आन की लड़ाई लड़ती रही। ऐसी लागी...........
मातृभाषा से सजी, उत्तर की दुल्हनिया "हिन्दी"
सी–सैट के जाल में, अब छटपटाने लगी। ऐसी लागी.........
आओ करे 'प्रयास', मिलकर निकालें उपाय
हिन्दुस्तान की "हिन्दी", अंतिम सांस गिनने लगी।
उसे बचाना ही होगा, उसका ताज लौटाना ही होगा,
'हिन्दी' फिर से भारत का गहना, कहलाने लगेगी।
ऐसी लागी..............

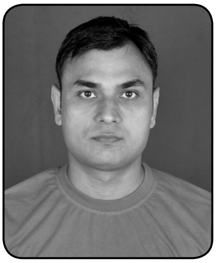

विनाश की ओर

श्री योगेश त्यागी,
लेखापरीक्षक

यह सत्य है कि जो पैदा हुआ है उसे एक दिन नष्ट होना है, मतलब उसका विनाश तय है। किन्तु यह विनाश भी प्राकृतिक होना चाहिए न कि अप्राकृतिक। अर्थात मनुष्य पैदा हुआ और परमात्मा ने उसे एक निश्चित अवधि का जीवन काल दिया। लेकिन यह निश्चित अवधि अच्छे कर्मों के साथ है। आज हमारा देश विपत्तियों से घिरा हुआ है, चाहे वह नक्सलवाद जैसी आंतरिक विपत्ति हो या आतंकवाद जैसी बाहरी। दोनों ही क्रियाकलाप मुट्ठी भर चंद स्वार्थी लोगों की देन है। लेकिन इसमें कितने बेगुनाह, मासूम मारे जाते हैं, क्या इसके बारे में आज कोई संवेदनशील है। जिन युवाओं के हाथ में देश के निर्माण की चाभी होनी चाहिए, उनके हाथों में बंदूकें थमा दी जाती हैं और अपने ही मुल्क का कीमती खून बहाया जाता है। हिंदुस्तान तो धरती का एक टुकड़ा मात्र है। यही हालात बल्कि इससे बदतर अन्य मुल्कों के हैं। इराक में आई एस आई एस नामक आतंकवादी संगठन अपने ही मुल्क के शिया समुदाय के लोगों की दिनदहाड़े हत्या कर रहा है। धर्म के प्रति इंसान इतना अंधा हो गया है कि उसे अच्छे व बुरे की पहचान नहीं होती। अभी हाल ही में पूर्वी यूक्रेन में कुछ लोगों की इसलिये निर्मम हत्या कर दी गई क्योंकि वे रूस के समर्थक नहीं थे। मलेशियाई विमान एम एच–17 जिसमें विभिन्न देशों के 298 नागरिक सवार थे, भी इसी पागलपन का शिकार हुआ। दो मुल्कों की लड़ाई में इन मासूमों की क्या गलती थी?

यही है अप्राकृतिक विनाश अर्थात मानव–रचित विनाश। इसमें उस परमात्मा को दोष मत दीजिये। यह धर्म मानव ने बनाया है, ईश्वर ने नहीं जिसके नाम पर दो धर्मों के लोग एक दूसरे के रक्त के प्यासे हो जाते हैं। धरती पर ये लकीरें भी इंसान ने ही खींची है जिसके नाम पर लाखों जानों की आहूति दी जाती है, लेकिन फिर भी शांति नहीं रहती। आज विश्व स्तर पर सबको सक्रिय होने की जरूरत है, आत्ममंथन करने की जरूरत है कि क्या मानवजाति स्वरचित विनाश की ओर नहीं बढ़ रही है, जिसे अगर चाहे तो रोका जा सकता है। मृत्यु शाश्वत है लेकिन अकाल मृत्यु ठीक नहीं है। हमें सम्पूर्ण मानवजाति के विकास के लिए प्रतिबद्ध होना है और जिस दिन हम समूह में मिल–जुलकर रहना सीख जायेंगे यह संभव हो जाएगा।

माँ का कर्ज़

सुश्री हेमलता गुप्ता,
लेखापरीक्षक

पति की मौत के बाद उसने अकेले दम पर ही गृहस्थी की चक्की चलाने का फैसला लिया। यूँ भी मजदूर पति के रहते उसे सिलाई–कढ़ाई करनी ही पड़ती थी। अब उसी पति के अभाव में सिलाई मशीन बूढ़े सास–ससुर, पाँच साल के बेटे और उसके खुद का पेट भरने का ज़रिया हो गयी। बेटे को पढ़ा लिखाकर कुछ बना दूँ, यही आस मन में लिए वह भी मशीन के साथ मशीन हो गयी। सूई की नोक नापते–नापते आँखें धुंधला गयीं। बेटा भी लाखों में एक निकला, कॉलेज में फर्स्ट डिवीजन से पास होते ही एक बड़ी कंपनी में मैनेजर हो गया। माँ की फटी साड़ियाँ रेशमी कपड़ों में बदल गयीं। घर की पुरानी चारपाई इम्पोर्टेड फर्नीचर के सामने फीकी पड़ गयी। उसकी काबिलियत देख मालिक ने खुश होकर अपनी बेटी का विवाह उसके साथ करा दिया। बहू खुशियों और संपन्नता के साथ–साथ अपना अहंकार भी ससुराल में लायी। बूढ़ी सास और उसकी कमखर्ची की आदतें उसकी शान में पाबंदी की तरह हो गयीं। इस तरह रोज–रोज के घर के कलह से सहमकर बूढ़ी सास ने खुद के अधिकारों को होम कर दिया। एक दिन किसी तरह बहू ने सास से अलग होने के लिए अपने पति को राजी कर लिया।

बेटा माँ से बोला, माँ आपके आशीर्वाद से मैं इतना कमा लेता हूँ कि किसी भी किस्म का कर्ज अदा कर सकूँ। इसलिए आज तक मुझ पर तुम्हारा जितना भी कर्ज है, मुझे बता दो। मैं सूद समेत चुका दूँगा, फिर तुम अपनी ज़िंदगी में खुश रहना और मैं अपनी जिंदगी में।

इस पर माँ ने टूटे दिल से कहा, ठीक है बेटा कुछ दिनों का समय दे, मैं हिसाब लगाकर बता दूँगी।

अगली रात माँ ने एक बाल्टी में पानी भरकर रख लिया। रात को जब बेटा सो रहा था तो माँ आहिस्ता से उसके कमरे में गयी और जहाँ बेटा लेटा था उसके नज़दीक एक लोटा भरकर पानी बिस्तर पर डाल दिया। बिस्तर गीला महसूस कर बेटा दूसरी ओर करवट लेकर सो गया। माँ ने कुछ समय बाद दूसरी करवट की ओर भी बिस्तर पर पानी डाल दिया। इस बार फिर बेटे ने करवट बदल ली। माँ तीन–चार बार इसी तरह पानी डालकर बिस्तर गीला करती रही। थोड़ी देर में ही बेटे की नींद खराब हो गयी।

माँ को बिस्तर गीला करते देख बौखलाकर उसने पूछा, "ये क्या कर रही हो माँ? तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है? इस गीले बिस्तर पर मैं सोऊगाँ कैसे''?

माँ ने उसे शांत भाव से उत्तर दिया "बेटा कल तू मेरा कर्ज़ उतारने की बात कर रहा था ना, तेरी परवरिश के लिए मैने ना जाने कितनी रातें ऐसे ही बिस्तर पर काटी हैं, जिसे तू गीला कर देता था। तुझे सूखे में सुलाकर मैं रात भर गीले में सोती थी, परन्तु कभी भी मैंने तुझपर गुस्सा नहीं उतारा और तू आज कुछ ही घंटों में मुझ पर बरस पड़ा।

बाहर जाती हुई माँ दरवाजे पर रुककर बोली, "जो कुछ घंटे मेरे गीले किये हुये बिस्तर पर नहीं लेट सका वो भला मेरी ममता का कर्ज क्या चुकाएगा"?

शून्य में खड़ा बेटा आँखो में आँसू भरे, अंधेरे में माँ की गुम होती परछाई को देखता रहा.....

लोक तंत्र का महापर्व

श्री सूर्यपाल,
लेखापरीक्षक

लोक तंत्र के महापर्व में ऐसा अबकी बार हुआ,
चाय बेचने वाला देखो अब मोदी सरकार हुआ।

खूब दिखाये उसने सपने सन्तों और फकीरों को,
फेंकेंगे हम सब उखाड़ के भ्रष्ट तन्त्र के पीरों को,

सोचा न था कभी किसी ने ऐसा चमत्कार हुआ। चाय बेचने.........
नया दौर लाऊंगा भाई ऐसा उसका वादा था,

हिन्द बनेगा सोन चिरइया ये उसका इरादा था,
दिया साथ जनता ने ऐसा उसका बेड़ा पार हुआ। चाय बेचने.........

मिलकर अब हम देखेंगे कितना इसमें जोर है,
होगी उन्नति देश की या फिर ये भी झूठा शोर है,

अच्छे दिन का सपना टूटा या साकार हुआ। चाय बेचने.........

करूणा की महत्ता

श्री अजय कुमार मिश्रा,
लेखापरीक्षक

परमात्मा को करूणा का सागर कहा गया है, कारण यह है कि करूणा की महिमा अपार है। करूणा उस अगाध सागर की तरह है जिसमें प्रेम, दया, उदारता, कृपा व ममता आदि रूपी नदियाँ समाकर वृहद रूप ले लेती हैं। इसी करूणा के वंशीभूत होकर महर्षि बाल्मीकि ने जब मैथुन करते क्रोंच पक्षी की बहेलिये द्वारा नर पक्षी की हत्या करने पर उनके मुख से अनायास ही काव्य शब्द निकले और उन्होंने महाकाव्य रामायण की रचना कर डाली। करूणा में प्रेम, दया, उदारता, कृपा आदि अभिव्यक्तियाँ किसी व्यक्ति विशेष या प्राणी मात्र के प्रति मानव मन में जन्म लेती हैं। जिस प्रकार वाराणासी के गंगा घाट की सीढ़ियों पर लेटे कबीर की छाती पर रामानन्द के पैर पड़ने पर करूणा के वशीभूत होकर कबीर को अपना शिष्य बना लिया था। करूणा यश, आत्मसंतोष, स्वर्ग, मोक्ष आदि की इच्छा नहीं रखती है। करूणा समस्त प्राणी मात्र यहाँ तक कि जड़, चेतन, सभी पर समभाव से शरद पूर्णिमा की चाँदनी की बरसात कर नहला जाती है। करूणा के सामने किसी भी प्रकार का भेद—भाव किसी भी रूप में अवरोध बनने का साहस नहीं कर सकता। जड़ चेतन, देव—दानव, साधु—असाधु सबको बगैर किसी भेदभाव के स्वयं में आत्मसात् कर लेने की गरिमा केवल करूणा को उपलब्ध है कदाचित यही कारण है कि करूणा उन्हें ही उपलब्ध होती है जो समस्त सांसारिक कामनाओं का अतिक्रमण कर ब्रह्म प्राप्ति के निकट पहुँच गये होते हैं। वास्तव में हम जिसे प्रेम कहते हैं वह सांसारिक होने के कारण प्रेम व घृणा रूपी सिक्के का एक पहलू होता है, जो मन की चंचलता व क्षण भंगुरता का प्रतीक होता है। हम जिससे प्रेम करते हैं, देर—सबेर उससे घृणा और जिससे घृणा करते हैं उसके प्रति कभी—न—कभी प्रेम का भाव हमारे मन में जरूर उठता है। प्रेम शाश्वत है जबकि घृणा तात्कालिक या क्षण भंगुर।

करूणा में अंहकार का लेश मात्र भी स्थान नहीं होता और न ही प्रत्युत्तर में करूणा करने वाला व्यक्ति कुछ चाहता है। करूणावान व्यक्ति किसी भी प्रकार की कामना नहीं करता। करूणा तो समस्त प्राणी मात्र के दुःख को दूर कर परम—तत्व की प्राप्ति की ओर अग्रसर होते देखना चाहती है। इसलिए करूणा सर्वश्रेष्ठ है, महान है। सच तो यह है कि करूणावान व्यक्ति समाज के लिए वरदान है, यही कारण है कि दुनिया के सभी महापुरूषों ने करूणा की शिक्षा देते हुए इसे आचरण में उतारने की बात कही है।

आईना जिंदगी का

हिना सलीम,
पर्यवेक्षक

बैठ जाती हूँ मिट्टी पे अक्सर ....
क्योंकि मुझे मेरी औकात अच्छी लगती है।
मैंने समन्दर से सीखा है, जीने का सलीका,
चुपचाप से बहना और अपनी मौज में रहना।
चाहती हूँ कि ये दुनिया बदल दूँ,

पर दो वक्त की रोटी के जुगाड़ से फुर्सत नहीं मिलती दोस्तों,
महंगी से महंगी घड़ी पहन कर देखी,
वक्त कभी भी मेरे हिसाब से नहीं चला,
यूँ तो हम दिल साफ रखा करते थे,
पता नहीं था कि कीमत चेहरों की होती है,
अगर नहीं है तो उसका जिक्र क्यों?
और अगर है तो फिर फिक्र क्यों?
दो बातें इन्सान को अपनों से दूर कर देती हैं,
एक तो उसका "अहम" दूसरा "वहम",
पैसे से सुख खरीदा नहीं जाता और दुख का कोई खरीदार नहीं होता।

मुझे ज़िंदगी का इतना तजुर्बा तो नहीं पर सुना है, सादगी में लोग जीने नहीं देते हैं।
माचिस की जरूरत यहाँ नहीं पड़ती दोस्तों,
सुना है आदमी, आदमी से जलता है,
दुनिया के बड़े–से–बड़े वैज्ञानिक, ये ढूँढ रहे है कि मंगल ग्रह पर जीवन है या नहीं,
पर आदमी ये नहीं ढूँढ रहा कि जीवन में मंगल है या नहीं।
ज़िंदगी में न जाने कौन सी बात "आखरी" होगी,
न जाने, कौन सी रात "आखरी" होगी,
मिलते–जुलते बातें करते रहो, एक दूसरे से,
न जाने कौन सी मुलाकात "आखरी" होगी।

अगर ज़िंदगी में कुछ पाना हो तो तरीका बदलो, इरादा नहीं,
गालिब ने क्या खूब कहा है
ऐ चाँद, तू किस मज़हब का है,
ईद भी तेरी, करवाचौथ भी तेरा।

स्वतंत्रता दिवस समारोह, 2014

टेबल टेनिस प्रतियोगिता

अपर उपनियंत्रक महालेखा परीक्षक का निरीक्षण

यूनिकोड का प्रशिक्षण

हिन्दी पखवाड़ा 2013 की झलकियाँ

Printed at Shiva Offset Press, Dehradun Ph. 0135-2715748